शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

लखनऊ, शनिवार 08 मार्च 2025 नगर संस्करण | पृष्ठ:-8 मूल्य:-4 रूपया | वर्षः- 14, अंक 63

प्रधानमंत्री कार्टून विवादः मद्रास उच्च... ● लखनऊ से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र ● **मैडी ग्रीन का शतक, न्यूजीलैंड...**

ललित मोदी के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही जारी रहेगीः सरकार

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने आज स्वीकार किया कि भगोड़े आर्थिक अपराधी ललित मोदी ने प्रशांत महासागर के द्वीपीय देश वानुआतु की नागरिकता ले ली है और कहा कि ललित मोदी के खिलाफ आर्थिक अपराध के मामलों पर कार्यवाही जारी रहेगी।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने ललित मोदी की नागरिकता के बारे में पूछे जाने पर कहा कि ललित मोदी ने लंदन स्थित भारत के उच्चायोग में अपना पासपोर्ट समर्पण करने के लिए आवेदन किया है। उन्होंने कहा कि पासपोर्ट जमा करने के मौजूदा नियमों और प्रक्रियाओं के आलोक में इसकी जांच की जाएगी। श्री जायसवाल ने कहा कि हमें यह भी जानकारी मिली है कि ललित मोदी ने वानुआतु की नागरिकता हासिल कर ली है। लेकिन हम अपने कानून के तहत आवश्यकतानुसार उनके खिलाफ आर्थिक अपराध के मामले को आगे बढ़ाना जारी रखेंगे।

बुजुर्ग की गोली मारकर हत्या

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर जिले के जलालाबाद क्षेत्र में एक हिस्ट्रीशीटर बदमाश ने बुजुर्ग की गोली मारकर हत्या कर दी। हत्या के पीछे पुरानी रंजिश वजह बताई जा रही है। अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण मनोज कुमार अवस्थी ने शुक्रवार को बताया कि क्षेत्र के काजरभोजी गांव निवासी बुजुर्ग आसाराम कश्यप (55) बीती देर रात अपने घर के बाहर बैठे हुए थे।

इसी बीच हिस्ट्रीशीटर सुमेर उनके पास पहुंचा और उनसे बात करने लगा। इसी बीच दोनों के बीच में किसी बात को लेकर वाद विवाद हो गया। इस दौरान आवेश में आकर हिस्ट्रीशीटर सुमेर ने आसाराम के गले में गोली मार दी। उन्होंने बताया कि गोली लगने से आसाराम की मौके पर ही मौत हो गई।

मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा

कर्नाटक सरकार का बड़ा फैसला

एजेंसी

बेंगलूरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को राज्य का बजट पेश किया और इस दौरान महत्वपूर्ण घोषणा की कि अब सार्वजनिक निर्माण अनुबंधों में मुसलमानों के लिए 4: आरक्षण दिया जाएगा।

यह आरक्षण सरकारी विभागों, निगमों और संस्थाओं के तहत 1 करोड़ रुपए तक के अनुबंधों में श्रेणी-2 बी (जो मुसलमानों को संदर्भित करता है) के तहत होगा। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने यह भी बताया कि अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), श्रेणी-1, श्रेणी-2 ए और श्रेणी-2 बी से संबंधित आपूर्तिकर्ताओं के लिए विभिन्न सरकारी खरीद में आरक्षण प्रदान किया जाएगा। इस फैसले पर भाजपा नेताओं ने तीव्र विरोध जताया। भाजपा नेता अमित मालवीय ने इसे असंवैधानिक करार देते हुए कहा कि धर्म के आधार पर आरक्षण देना भारतीय संविधान के खिलाफहै। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस की यह रणनीति उन समुदायों के अधिकारों को कमजोर करने की कोशिश है, जिनके लिए संविधान में विशेष प्रावधान हैं। भाजपा ने सिद्धारमैया पर तुष्टीकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया और कहा कि बजट में मुस्लिम समुदाय को फायदा पहुंचाने वाले प्रावधानों पर ज्यादा ध्यान दिया गया है, जबकि एससी, एसटी और ओबीसी जैसे हाशिए पर पड़े समुदायों की जरूरतों को नजरअंदाज किया गया है। बीजेपी ने बजट में मुसलमानों के लिए कई प्रावधानों का उल्लेख किया, जिनमें सरकारी अनुबंधों में मुसलमानों के लिए आरक्षण, मुस्लिम लड़कियों के लिए आवासीय कॉलेज, मुस्लिम छात्रों के लिए छात्रवृत्ति में वृद्धि, और मुस्लिम सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए 50 लाख रुपए की राशि शामिल है। इसके अलावा, मुस्लिम शादियों के लिए 50,000 रुपए की सहायता और वक्फ संपत्तियों के लिए 150 करोड़ रुपए का आवंटन भी किया गया है। वहीं, कांग्रेस ने इस बजट को ऐतिहासिक बताया। कांग्रेस नेता अजय सिंह ने इसे सिद्धारमैया का 16वां बजट बताया, जिसमें 4,09,549 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने सभी गारंटियों को लागू किया है, जिससे राज्य में विकास हो रहा है। सिंह ने बुनियादी ढांचे, खासकर सड़कों के निर्माण पर ध्यान देने का भी उल्लेख किया।

नमामी गंगे कार्यक्रम का कार्यकाल एक साल बढ़ा

नयी दिल्ली। सरकार ने अपनी महत्वकांक्षी योजना नमामी गंगे कार्यक्रम-एनजीपी को एक साल आगे खिसकाते हुए अगले वर्ष मार्च तक बढ़ा दिया है। जल शक्ति मंत्रालय ने यह जानकारी देते हुए शुक्रवार को बताया कि सरकार ने गंगा तथा उसकी सहायक नदियों के संरक्षण के लिए जून 2014 में 'नमामि गंगे कार्यक्रम' एक एकीकृत संरक्षण मिशन की शुरुआत की थी। सरकार ने 20,000 करोड़ रुपये के बजट परिव्यय के साथ इसे 'महत्वाकांक्षी कार्यक्रम' के रूप में अनुमोदित किया था और इसका उद्देश्य गंगा के प्रदूषण में प्रभावी कमी लाना और इसका संरक्षण करना था। मंत्रालय के अनुसार राष्ट्रीय गंगा योजना को 2025-26 के लिए 3400 करोड़ रुपये का वित्तीय परिव्यय आवंटित किया गया है औ इस निवेश का मसकद सीवेज उपचार क्षमता को बढ़ाना, गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता में सुधार करना और इसके संरक्षण के साथ ही 2025 तक निर्धारित स्नान मानकों को प्राप्त करने के लिए औद्योगिक कचरे के निर्वहन को विनियमित करना है।

जब कोई छूटेगा नहीं तो कोई रूठेगा कैसे

गुजरात के सूरत में बोले प्रधानमंत्री, हर गरीब की गारंटी लेगा मोदी

एजेंसी

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को सूरत खाद्य सुरक्षा संतृप्ति अभियान का शुभारंभ किया और पात्र लाभार्थियों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के तहत लाभ वितरित किए। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस पहल के हिस्से के रूप में, प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के तहत लगभग 2 लाख पात्र लाभार्थियों को लाभ वितरित किए। इस पहल का उद्देश्य व्यापक खाद्य सुरक्षा कवरेज सुनिश्चित करना है, जिससे वंचितों को आवश्यक खाद्यान्न उपलब्ध कराने की सरकार की प्रतिबद्धता को बल मिलता है।

मोदी ने इस दौरान कहा कि सूरत अनेक मामलों में गुजरात का, देश का एक लीडिंग शहर है। सूरत आज गरीब को, वचिंत को भोजन और पोषण की सुरक्षा देने में आगे निकल रहा है। यहां आज जो खाद्य सुरक्षा, परिपूर्णता अभियान चलाया गया है, ये दूसरे जिलों के लिए भी प्रेरणा बनेगा। ये परिपूर्णता अभियान सुनिश्चित करता है- न कोई भेदभाव, न कोई छूटे, न कोई रूठे और न कोई किसी को ठगे। ये तुष्टिकरण की भावना को छोड़कर संतुष्टिकरण की पवित्र भावना को आगे बढ़ाता है। जब सरकार ही लाभार्थी के दरवाजे पर जा रही है, तो कोई छूटेगा कैसे... और जब कोई छूटेगा नहीं तो कोई रूठेगा कैसे। जब सोच ये हो कि हमें सब तक लाभ पहुंचाना है, तो ठगने वाले दूर भाग जाते हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि विकसित भारत की यात्रा में पौष्टिक भोजन की बड़ी भूमिका है। हमारा लक्ष्य देश के हर परिवार को पर्याप्त पोषण देने का है ताकि कुपोषण और एनीमिया जैसी बड़ी समस्याओं से देश मुक्त हो सके। उन्होंने कहा कि आज, दुनिया भर के कुछ सबसे बड़े संगठन इस बात को स्वीकार करते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान ने गांवों में बीमारियों को कम करने में मदद की है। हर घर जल अभियान, जो स्वच्छ पानी तक पहुंच सुनिश्चित करता है, ने भी बीमारियों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि पहले एक जगह का राशन कार्ड दूसरी जगह नहीं चलता था। हमने इस समस्या का समाधान किया।

सिलवासा में पीएम ने नमो अस्पताल का किया उद्घाटन

सूरत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फ़िर दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। पीएम दोपहर 2 बजे सूरत पहुंचे और यहां से केंद्र शासित प्रदेश सिलवासा पहुंचे। यहां उन्होंने 450 बिस्तरों वाले नमो अस्पताल का उद्घाटन करने के साथ ही 650 बिस्तरों की क्षमता वाले दूसरे चरण का शिलान्यास किया। इसके बाद सिलवासा में 2587 करोड़ रुपए की लागत वाली विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। पीएम ने अपने संबोधन में हेल्थ पर कई बातें कहीं। उन्होंने कहा मैने यहां बड़ा अस्पताल बनवाया है, लेकिन मैं चाहता हूं कि किसी को यहां आना ही न पड़े। आप लोग हमेशा स्वस्थ रहें। क्योंकि, देश के लिए चिंता की बात यही है कि हमारे देश में भी मोटापे की समस्या बढ़ रही है। हाल ही में मोटापे की समस्या पर एक रिपोर्ट सामने आई है।

राष्ट्रीय स्मृति स्थल पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के स्मारक के निर्माण को परिवार ने दी मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्मृति स्थल पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का एक स्मारक बनाने का रास्ता साफ हो गया है क्योंकि उनके परिवार ने इसके लिए प्रस्तावित स्थल को मंजूरी दे दी है। सिंह के परिवार के करीबी सूत्रों ने बताया कि उन्होंने आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय को पत्र लिखकर प्रस्तावित स्थल को अपनी मंजूरी दे दी है तथा स्वीकृति पत्र भेज दिया है।

मनमोहन सिंह की तीनों बेटियां और उनके पति पहले ही प्रस्तावित स्मारक स्थल का दौरा कर चुके हैं। प्रस्तावित स्मारक स्थल लगभग 900 वर्ग मीटर में फैला हुआ है और राष्ट्रीय स्मृति स्थल पर स्थित है, जहां कई पूर्व प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों के स्मारक स्थापित किए गए हैं। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का स्मारक मनमोहन सिंह के लिए प्रस्तावित स्थल के पास है। सूत्रों ने बताया कि इस प्रक्रिया में अगला कदम मनमोहन सिंह की स्मृति में स्थापित किए जाने वाले न्यास (ट्रस्ट) के नाम पर भूमि का हस्तांतरण होगा। सूत्रों ने बताया कि परिवार को न्यास के सदस्यों के नामों के प्रस्ताव और उन्हें अंतिम रूप देना है। जल्द ही इस न्यास का गठन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि न्यास के गठन के बाद सरकार स्मारक के निर्माण के लिए 25 लाख रुपये का अनुदान हस्तांतरित करेगी। केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) के अधिकारी पहले ही प्रस्तावित स्थल का दौरा कर चुके हैं। भारत के आर्थिक सुधारों के वास्तुकार माने जाने वाले मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर, 2024 को 92 वर्ष की आयु में उम्र संबंधी जटिलताओं के कारण निधन हो गया था। सिंह की पत्नी गुरशरण कौर, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में निगमबोध घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया था।

मुख्तार अंसारी के बेटे अब्बास को सुप्रीम कोर्ट से राहत

गैंगस्टर मामले में मिली अंतरिम जमानत

एजेंसी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट से मुख्तार अंसारी के बेटे और उत्तर प्रदेश के विधायक अब्बास अंसारी राहत मिली है। सर्वोच्च अदालत ने अब्बास को उत्तर प्रदेश गैंगस्टर एवं समाज विरोधी गतिविधि अधिनियम 1986 के तहत दर्ज केस में अंतरिम जमानत देने का निर्णय सुनाया है। बता दें कि इस मामले में अब्बास अंसारी सितंबर 2024 से जेल में बंद हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अब्बास को हम शर्तों के साथ जमानत प्रदान करते हैं। वह लखनऊ में अपने ऑफिशियल घर में रहें और अपनी विधानसभा क्षेत्र मऊ जाएं। चित्रकूट का सेशंस कोर्ट बेलबॉन्ड कि राशि तय करेगा। वह लंबित मामलों पर कोई बयान नहीं देंगे। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि छह सप्ताह में पुलिस अब्बास के चाल चलन पर स्टेटस रिपोर्ट देंगे। इसके बाद हम सुनवाई करेंगे। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की खंडपीठ ने कहा कि अंसारी कई मामलों का सामना कर रहे हैं, लेकिन उन्हें वर्तमान मामले को छोड़कर सभी मामलों में जमानत दी गई है। अंसारी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने तर्क दिया कि ये आरोप पहले दर्ज एफआईआर के आरोपों से मिलते-जुलते हैं, जिसे विवेक का प्रयोग न करने के कारण रद्द कर दिया गया था और पुलिस ने पहले ही सभी साक्ष्य एकत्र कर लिए हैं। वहीं, उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल केएम नटराज ने अंसारी के आपराधिक इतिहास और प्रभाव का हवाला देते हुए जमानत याचिका का विरोध किया और तर्क दिया कि वह गवाहों को धमका सकता है। हालांकि, बेंच ने नोट किया कि जिन गवाहों से अभी तक पूछताछ नहीं की गई है वे पुलिस अधिकारी हैं।

शमी पर भारतीय मुसलमानों को गर्व है: बदर काजमी

एजेंसी

सहारनपुर। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के चैंपियंस ट्राफी में आस्ट्रेलिया के साथ सेमीफाइनल मैच में मैदान पर एनर्जी ड्रिंक पीने को लेकर हो रही आलोचना को पब्लिसिटी स्टंट करार देते हुये देवबंद के इस्लामिक विद्वान और लेखक बदर काजमी ने कहा कि मोहम्मद शमी पर भारतीय मुसलमानों को गर्व है। वह चैंपियंस ट्राफी में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और उन्होंने अपने शानदार खेल से दुनिया के क्रिकेट प्रेमियों का मन मोह लिया है। बरेली मसलक के मौलाना शाहबुद्दीन रिजवी राष्ट्रीय अध्यक्ष आल इंडिया मुस्लिम जमात ने यह कहकर मोहम्मद शमी की आलोचना की है कि रमजान में रोजे ना रखना गुनाह है और मोहम्मद शमी शरियत की नजर में अपराधी हैं। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। रिजवी ने कहा कि शमी को शरियत का पालन करते हुए रोजा रखना चाहिए था। मौलाना रजवी के बयान की निंदा करते हुए देवबंद के इस्लामिक विद्वान और लेखक बदर काजमी ने कहा कि खेल के दौरान रोजा रखना इस्लामिक ऐतबार से अनिवार्य नहीं था। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए बरेली मौलवी ने शमी की गलत आलोचना की है। कुरान में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति रोजे रखने में सक्षम है और किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वह रोजा नहीं रख पाता है तो वह उसकी एवज में दो गरीब लोगों को भोजन करा सकता है।

अल्पसंख्यकों के विरुद्ध अपराध रोके बंगलादेशः भारत

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत ने बंगलादेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था पर चिंता जताई है तथा एक ऐसे स्थिर, शांतिपूर्ण, समावेशी और प्रगतिशील बंगलादेश के प्रति समर्थन एवं विकास सहयोग बढ़ाने की इच्छा का इज़हार किया है जिसमें हिंदुओं सहित सभी अल्पसंख्यकों के साथ-साथ उनकी संपत्तियों एवं धार्मिक संस्थानों की रक्षा और हिंसक उन्मादियों के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित हो। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने आज यहां नियमित ब्रीफिंग में बंगलादेश के बारे में पूछे गये सवालों के जवाब में यह बात कही। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा, हम एक स्थिर, शांतिपूर्ण, समावेशी और प्रगतिशील बंगलादेश का समर्थन करते हैं जिसमें सभी मुद्दों को लोकतांत्रिक तरीकों से और समावेशी और भागीदारी चुनाव आयोजित करके हल किया जाये। हम बिगड़ती कानून और व्यवस्था की स्थिति के बारे में चिंतित हैं, हिंसक चरमपंथियों की रिहाई से और अधिक बढ़ गए, जिन्हें गंभीर अपराधों के लिए सजा सुनाई गई थी। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा से जुड़े एक सवाल पर श्री जायसवाल ने कहा, हमने बार-बार रेखांकित किया है कि बंगलादेश की अंतरिम सरकार की जिम्मेदारी है कि वह हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के साथ-साथ उनकी संपत्तियों और धार्मिक संस्थानों की रक्षा करे। हालांकि, 5 अगस्त, 2024 से 16 फरवरी, 2025 तक 2374 से अधिक घटनाओं में से केवल 1254 घटनाओं की पुलिस द्वारा पुष्टि की गई है। इसके अलावा, इन 1254 घटनाओं में से 98 प्रतिशत घटनाओं को 'प्रकृति में राजनीतिक' माना गया था। हम उम्मीद करते हैं कि बंगलादेश इस तरह के बिना किसी भेदभाव के हत्याओं, आगजनी और हिंसा के सभी अपराधियों की पूरी तरह से जांच करेगा और न्याय के कटघरे में लाएगा। बंगलादेश के साथ विकास सहयोग के बारे में पूछे जाने पर प्रवक्ता ने कहा कि विकास सहयोग बंगलादेश के लोगों के साथ हमारे संबंधों का एक प्राथमिकता वाला क्षेत्र है। हाल की सुरक्षा स्थिति और लंबे समय से स्थानीय मुद्दों ने इनमें से कुछ परियोजनाओं के कार्यान्वयन की गति को प्रभावित किया है। इसलिए आधिकारिक चर्चाओं में परियोजना पोर्टफोलियो को तर्कसंगत बनाने और समयबद्ध तरीके से पारस्परिक रूप से सहमत परियोजनाओं को निष्पादित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

YouTube shakuntimes

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की

प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया

यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका

अधिक जानाकरी के लिए

अपना नाम व जिला हमें

WhatsaApp करें

9935781155, 9415052283

ऑपरेशन अवैध अस्पताल

वाराणसी जनपद का स्वास्थ्य विभाग भगवान भरोसे

आयुर्वेद की डिग्री पर संचालित हो रहा है एलोपैथ का अस्पताल

लेढूपुर के सत्यम हॉस्पिटल का है मामला

शकुन टाइम्स

राज कुमार यादव

भाग - 1

वाराणसी। सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ स्वास्थ्य विभाग पर नकेल कसने के लिए चाहे जितने भी प्रयास कर ले परंतु स्वास्थ्य विभाग की मेहरबानी से मानकविहीन अवैध अस्पतालों का बोल बाला है ताजा मामला वाराणसी जनपद के लेढूपुर का है जहां न्यू पेट्रोल पंप के सामने शिवाजी कॉलोनी में सत्यम हॉस्पिटल के नाम से एक मानकविहीन अवैध अस्पताल का संचालन किया जा रहा है और इस अस्पताल के डॉक्टर नन्द लाल के आगे तो अच्छे-अच्छे एमबीबीएस डॉक्टर भी फेल है यहां के डॉक्टर नन्द लाल खुलेआम कहते है कि मेरे यहां हर प्रकार के बीमारी का आपरेशन किया जाता है अब सोचने वाली बात यह है कि आखिर डॉक्टर नन्द लाल के पास चिकित्सा क्षेत्र की कौन सी डिग्री है कि वह सभी प्रकार के ऑपरेशन कर लेते है क्या वाराणसी जनपद का स्वास्थय विभाग इस प्रकार के फर्जी डॉक्टर पर कोई ठोस कार्यवाई करेगा या फिर मामले में हिला हवाली करके मामले को ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा।

सत्यम हॉस्पिटल का ऑपरेशन थियेटर देखकर खुद सोच में पड़ जाएगा स्वास्थ्य विभाग

शकुन टाइम्स की स्टिंग टीम जब सत्यम हॉस्पिटल में गई तो वहा का हाल देखकर ऐसा लगा कि किसी रेलवे स्टेशन के बाहर आ गए है क्योंकि हॉस्पिटल के अंदर जाते है दो महिलाएं खाना बनाते मिली और जब टीम डॉक्टर नन्द लाल को खोजते प्रथम तल पर गई तो वहा का ऑपरेशन थियेटर देखकर ऐसा लगा कि किसी स्कूल के प्ले ग्राउंड में आ गए है एक बुजुर्ग मरीज बेड पर लेटी हुई थी और उसके ऑपरेशन की तैयारी चल रही थी पुरे ऑपरेशन थियेटर में किसी भी प्रकार के साफ सफाई की कोई भी व्यवस्था नहीं थी और पूरे स्टाफ इधर उधर घूम रहे थे

जिलाधिकारी ने परीक्षा केंद्र का किया निरीक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। जनपद में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परिषदीय हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट की परीक्षा-2025 की आज की प्रथम पाली की परीक्षा के दौरान जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र द्वारा डॉ0 भीमराव अंबेडकर इंटर कालेज यादवगंज सिकरारा का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने केंद्र व्यवस्थापकों से परीक्षार्थियों की संख्या की जानकारी लेते हुए नकल विहीन और शुचितापूर्ण परीक्षा कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सी.सी.टी.वी. कैमरा कक्ष और परीक्षा कक्षों का भी निरीक्षण किया। उन्होंने केंद्र व्यवस्थापकों को परीक्षा के सुचारु और नकलविहीन रूप से संचालन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

नवविवाहित जोड़े को पिंडरा विधायक व जिला पंचायत अध्यक्ष वाराणसी ने दिया आशीर्वाद

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। पिंडरा विकासखण्ड के मैदान में आयोजित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत 51 जोड़ों के विवाह समारोह में पिंडरा विधायक डॉ अवधेश सिंह व जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या की गरिमामई उपस्थिति रही। बाल विवाह एवं दहेज मुक्त व्यवस्था के साक्षी बने सभी जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम मे जिला उपध्यक्ष भाजपा पवन सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी गिरीश चंद दुबे,जिला प्रोबेशन अधिकारी सुधाकर शरण पाण्डेय,खण्ड विकास अधिकारी पिंडरा डॉ छोटेलाल तिवारी, खण्ड विकास अधिकारी बड़ागांव राजेश सिंह, सहायक विकास अधिकारी सहकारिता प्रियंका मिश्रा, अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा दिलीप दुबे,लेखाकार बृजेश पाण्डेय मौजूद रहे।

खड़ी डीसीएम में आल्टो कार चालक ने मारी टक्कर, दो लोग हुए घायल

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। चोलापुर थाना क्षेत्र के धरसौना बाजार में वाराणसी-आजमगढ़ मार्ग पर सड़क किनारे खड़ी मालवाहक डीसीएम में गुरुवार देर रात्रि अनियंत्रित ऑल्टो सवार दो युवकों ने जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि ऑल्टो कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। घटना में जगदीशपुर ग्राम निवासी प्रदीप उर्फ सोनू (25 वर्ष) तथा किशन मौर्य (27 वर्ष) गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ऑल्टो सवारों ने विपरीत दिशा में जाकर खड़ी डीसीम में टक्कर मारी है। स्थानीय लोगों की मदद से दोनों घायलों को चोलापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने गंभीर स्थिति देखते हुए, पं. दीनदयाल राजकीय चिकित्सालय रेफर कर दिया।

बेंगलुरु से आये युवक के साथ दो अन्य युवकों की सड़क हादसे में तीन की मौत

लखीमपुर खीरी। कस्ता भीखमपुर मार्ग पर बृहस्पतिवार शाम को बाइक सवार तीन युवकों की अज्ञात वाहन से जोरदार टक्कर होने से दो की मौके पर मौत हो गई। वहीं गंभीर रूप से घायल की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान हुई मौत। इस बाइक से हुए भीषण सड़क हादसे में बाइक के परखच्चे उड़ गए युवा लड़के बेंगलुरु में प्राइवेट नौकरी करते थे। चार दिन पहले ही अपने घर आए थे ।थाना मितौली के ग्रन्ट इनायत चीफ के गांव लक्ष्मणनगर निवासी सभी युवा लड़कों की एक साथ मौत होने से पूरा गांव गमगीन हो गया है। सभी मृतक आर्थिक रूप से सामान्य परिवारों से हैं। मृतकों का पोस्टमार्टम मितौली पुलिस ने कराया है।

संक्षिप्त सामाचार

स्वयं सहायता समूह की दीदीयों द्वारा व्यापार मंडल के सदस्यों को पूर्णतः ऑर्गेनिक हर्बल गुलाल के बारे में दी गई जानकारी

हापुड़। शुक्रवार को सीडीओ हापुड़ हिमांशु गौतम एवं संयुक्त हापुड़ उद्योग व्यापार मंडल के मध्य एक बैठक का आयोजन चेंबर ऑफ कॉमर्स चंडी रोड हापुड़ में किया गया जिसमें मुख्य विकास अधिकारी ने व्यापार मंडल के सदस्यों को अवगत करते हुए कहा कि सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत गरीब महिलाओं को रोजगार देते हुए स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया है जिसमें उन्हें अनेकों प्रकार की हस्तकलाओं का प्रशिक्षण दिया गया है जिससे वह अपना रोजगार स्थापित कर सकें। आगामी होली के पर्व को देखते हुए स्वयं सहायता समूह की दीदीयों द्वारा ऑर्गेनिक हर्बल गुलाल बनाया गया है जो पालक, गेंदा और चकुंदर आदि से निर्मित है। स्वयं सहायता समूह की दीदीयों द्वारा व्यापार मंडल के सदस्यों से ऑर्गेनिक हर्बल गुलाल को क्रय करने एवं स्टॉल लगाने का आग्रह किया गया , सीडीओ ने जनपद वासियो को सूचित करते हुए कहा कि ऑर्गेनिक हर्बल गुलाल से ही होली का पर्व मनाये जो उनके ही क्षेत्र में स्टोलों पर स्वयं सहायता समूह की दीदीयों द्वारा उचित दरों पर विक्रय किया जाएगा।

मेगा स्वास्थ्य परिक्षण एवं दवा वितरण शिविर का आयोजन आज

धानापुर। स्वयं सेवी संस्था अभिनव विकास समिति लखनऊ द्वारा बुद्धपुर (बूढ़ेपुर) स्थित माया प्र0 औद्योगिक प्रतिक्षण संस्थान में आज शनिवार दिनांक 8 मार्च 2025 को मेगा चिकित्सा कैम्प का आयोजन किया जाएगा। जिसकी जानकारी देते हुए अजय सिंह (किट्टू) ने बताया कि मेगा चिकित्सा हेल्थ कैम्प में शुगर, ब्लड प्रेशर आदि के साथ साथ आँखों की जाँच की भी व्यवस्था रहेंगी। तथा संस्था द्वारा प्रतिभागियों को नि:शुल्क दवा का भी वितरण किया जाएगा। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सफाई एवं संचारी रोगो से बचाव तथा नियमित आवश्यक जाँचो के सम्बन्ध में जागरूक करने के लिए एक हेल्थ मैराथन तथा बालिकाओं के लिए किशोरावस्था स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाएगा।

बदमाशों ने बारात में दूल्हे के पिता से रुपयों से भरा बैग लूटा

शाहगंज /जौनपुर। बीती रात नगर में बारात निकलने के दौरान बाइक सवार तीन की संख्या में बदमाशों दूल्हे के पिता का बैग लूटकर फरार हो गए। पीड़ित के मुताबिक घटना में चार लाख रुपये से अधिक की लूट बताई गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुटी रही।

आजमगढ़ जिले के सरायमीर थाना क्षेत्र के बस्ती निवासी शीतला प्रसाद जायसवाल की बेटी अर्चना के विवाह का कार्यक्रम नगर के आजमगढ़ मार्ग स्थित एक मैरेज हाल से होना था। मैरेज से कुछ ही दूरी पर नई सब्जी मंडी के पास से ज्ञान चंद जा जायसवाल अपने बेटे राम आशीष की बारात निकाल कर शादी घर की तरफ आ रहे थे। सब्जी मंडी के सामने बारात पहुंची जिसमें लोग डीजे की धुन पर थिरकते हुए आगे बढ़ रहे थे, इसी एक बाइक पर सवार तीन की संख्या में पहुंचे बदमाशों ने दूल्हे आशीष के पिता ज्ञान चंद को धमकाते हुए रुपयों से भरा बैग लूटकर आजमगढ़ की ओर भाग निकले। बदमाशों के जाने के बाद पीड़ित द्वारा बाराती और रिश्तेदारों को घटना की जानकारी दी तो बारात में अफरातफरी का महौल बन गया। पीड़ित द्वारा घटना की सूचना डायल 112 पर की गई। सूचना पर पहुंची पीआरवी और कोतवाली पुलिस मामले की जांच में जुटी रही। पीड़ित के मुताबिक बैग में पांच लाख रुपये लेकर आया था, जिसमें कुछ रुपए खर्च हुए थे।

जी एच के हॉस्पिटल में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। नगर के मोहल्ला उमरपुर में स्थित जी एच के हॉस्पिटल में एफओजीएसआई फेडरेशन ऑफ ऑब्स्टेट्रिक एंड गायनेकोलॉजिकल सोसाइटीज ऑफ इंडिया के तत्वावधान में इंटरनेशनल महिला दिवस के उपलक्ष्य में एक नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें डॉ.अम्बर खान वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा दर्जनों महिलाओं का नि:शुल्क शुगर, होमोग्लोबीन की जाँच की गई। पत्रकारों से वार्ता करते हुए जी एच के हॉस्पिटल की डायरेक्टर डॉ.अम्बर खान ने बताया कि एफओजीएसआई द्वारा आयोजित नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में आज 63 महिलाओं की विभिन्न जाँच की गई और परामर्श किया गया। उन्होंने बताया कि एफओजीएसआई विशेषकर महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए अक्सर विभिन्न स्थानों पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाते हैं जिसमें स्वास्थ्य जांच,परामर्श और जागरूकता कार्यक्रम शामिल होते हैं। इस अवसर पर आशीष, जय हिंद, रंजू ,सरिता, आदर्श, शाहिद, हिना, शबाना, मनीषा,माया, अंतिमा, एज़ाज़, शुभम आदि उपस्थित रहे।

एसएन हाल की टीम महिला वर्ग की विजेता बनीं

अलीगढ़। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के एसएन हाल की छात्राओं द्वारा इंटर हाल एथलेटिक मीट में महिला वर्ग में चौम्पियनशिप ट्राफी हासिल करने तथा 22 छात्राओं को पद मिलने पर हाल में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। हाल की प्रोवोस्ट प्रोफेसर अफ्शां बे विजेता टीम का बधाई देते हुए कहा कि हाल की छात्राओं का चौम्पियनशिप ट्राफी जीतना सभी के लिए गौरव का क्षण है। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए खेलों में भागेदारी भी आवश्यक है। इस प्रतियोगिता में एसएन हाल की मुस्कान, इकरा, खुशबू, वैशाली, लुबना, दीप्ती, सुमन, भावना, दीक्षा, मोनम, पूनम, मोविका, शिवांगी असफिया और दीपिका ने भाग लिया।

पुलिस टीम ने बलवा नियंत्रण के लिए किया ड्रिल अभ्यास

शकुन टाइम्स संवाददाता

खेतासराय /जौनपुर। त्योहार और कानून-व्यवस्था को मजबूत करने और आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए खेतासराय पुलिस टीम ने शुक्रवार को बलवा नियंत्रण (रायट कंट्रोल) के तहत एक विशेष ड्रिल अभ्यास किया। थानाध्यक्ष रामाश्रय राय ने बताया कि थाना परिसर में आयोजित इस अभ्यास में पुलिसकर्मियों ने भीड़ नियंत्रण, लाठीचार्ज, आंसू गैस के गोले छोड़ने और शांति बहाली के तरीके सीखे। थानाध्यक्ष ने बताया उच्चाधिकारियों के निर्देश पर बलवा नियंत्रण ड्रिल अभ्यास किया गया। उन्होंने बताया कि बलवा या किसी भी अप्रिय स्थिति में संयम और सतर्कता के साथ कार्रवाई करना आवश्यक है। ड्रिल के दौरान पुलिस कर्मियों ने दंगा नियंत्रण उपकरणों का इस्तेमाल कर भीड़ को नियंत्रित करने का अभ्यास किया। यह अभ्यास पुलिस की तत्परता और कुशलता बढ़ाने के लिए किया गया है, ताकि किसी भी स्थिति में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई की जा सके। इस तरह के अभ्यास समय-समय पर किए जाएंगे, जिससे पुलिस बल सदैव तैयार रहे।

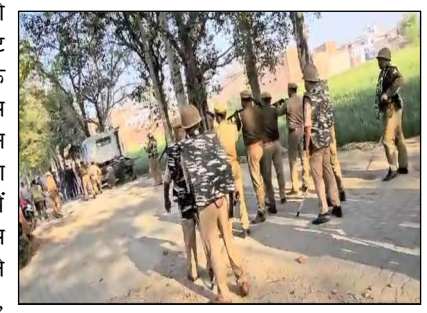

राजद सदस्यता जिला अररिया में अभियान समीक्षा की बैठक किया गया

शकुन टाइम्स संवाददाता

अररिया / बिहार। राजद सदस्यता अभियान वर्ष 2025-2028 की समीक्षा बैठक में बतौर अररिया ज़िलाध्यक्ष मैं सम्मिलित हुआ। ज़िला संगठन प्रभारी डॉ (प्रो.) कुमार चन्द्रदीप जी, ज़िला प्रधान महासचिव श्री मनोज विश्वास जी भी बैठक में शामिल हुए। अररिया ज़िले में चल रहे सदस्यता अभियान की अद्यतन रिपोर्ट हमने प्रदेश कार्यालय को सौंपी।

(अररिया ब्यूरो सरफराज आलम) आज के महत्वपूर्ण बैठक में राष्ट्रीय निर्वाचन पदाधिकारी डॉ रामचंद्र पुर्वे जी, प्रदेश निर्वाचन पदाधिकारी ज़नाब तनवीर हसन साहब, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री उदय नारायण चौधरी जी, राष्ट्रीय महासचिव श्री भोला यादव जी, प्रदेश प्रधान महासचिव श्री रणविजय साहू जी, सहायक निर्वाचन पदाधिकारी श्री चितरंजन गगन जी, माननीय लोकसभा सांसद श्री सुरेंद्र यादव जी, विधान पार्षद ज़नाब क़ारी शोहेब साहब, मुख्यालय प्रभारी श्रीमती मुकुंद सिंह जी, सहित राजद के वरिष्ठ नेतागण, ज़िला प्रभारीगण, प्रमंडलीय प्रभारीगण, ज़िलाध्यक्षगण, ज़िला प्रधान महासचिवगण मौजूद थे। बैठक के पश्चात् राजद के कई नेताओं से मुलाक़ात हुई। अररिया ज़िले के भी कई साथी वहां मौजूद थे।

झांसी-कानपुर हाईवे पर ट्रक में घुसी कार, पिता की मौत

उरई/जलौन। जालौन में शुक्रवार को झांसी-कानपुर नेशनल हाईवे पर सड़क हादसे में व्यक्ति की मौत हो गई। हादसा तब हुआ जब एक कार पीछे से ट्रक में जा घुसी। इस हादसे में तीन अन्य लोग भी घायल हुए।

उरई के पटेल नगर निवासी रमाशंकर पटेल अपनी पत्नी किरन देवी (52), पुत्र कृष्णा पटेल (22) और उसके दोस्त धैर्य प्रताप के साथ कानपुर से वापस लौट रहे थे। वे अपने दोस्त अभिषेक की शादी में शामिल होने गए थे। गुरुवार रात करीब एक बजे कानपुर से निकले परिवार की कार जब शुक्रवार सुबह तीन बजे संकट मोचन मंदिर के पास पहुंची। तब आगे चल रहे ट्रक ने अचानक ब्रेक लगा दिया। इससे कार ट्रक में पीछे से जा घुसी। हादसे के बाद ट्रक चालक ट्रक छोड़कर फरार हो गया। आसपास के ढाबा संचालकों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने सभी घायलों को मेडिकल कॉलेज पहुंचाया।

नई शिक्षा नीति के तहत चार राज्यों में पढ़ाई जा रही हैं अर्थशास्त्र की पुस्तकें

शकुन टाइम्स संवाददाता

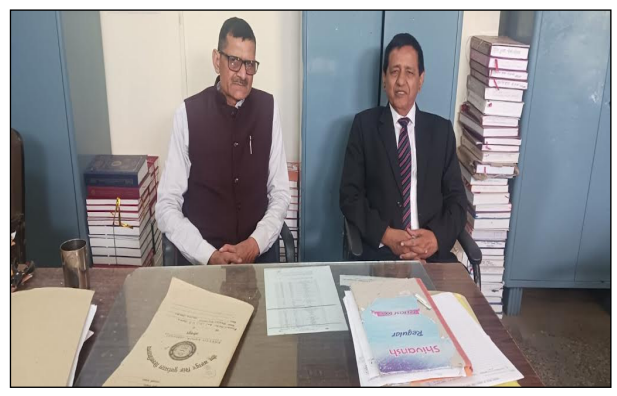

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, में व्यावसायिक अर्थशास्त्र विषय के शोधार्थी राकेश कुमार उपाध्याय की मौखिक परीक्षा के दौरान अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ प्रो. जय प्रकाश मिश्रा ने नई शिक्षा नीति के तहत अर्थशास्त्र की पुस्तकों के प्रभाव पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

प्रो. मित्तल ने बताया कि उनके द्वारा लिखित सभी सेमेस्टर की पुस्तकें अब उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत इन पुस्तकों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जिससे छात्रों को अद्यतन और व्यवहारिक ज्ञान मिल सके। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कर्मचारी नेता डॉ. दिलगीर हसन ने बताया कि प्रो. जय प्रकाश मिश्रा अब तक अर्थशास्त्र विषय पर 51 पुस्तकें लिख चुके हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक अर्थशास्त्र विषय की केवल एक पुस्तक मान्यता प्राप्त है, जो जेठे पीठ मित्रा जी पी एम ए पाठ्यक्रम में पढ़ाई जा रही है। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में किए जा रहे इन शैक्षणिक प्रयासों से छात्रों को नई शिक्षा नीति के अनुरूप आधुनिक ज्ञान प्राप्त होगा और वे प्रतिस्पर्धी माहौल में अधिक सक्षम बन सकेंगे।

हरदोई में हाईस्कूल परीक्षा में धांधली, लिखी हुयी कापियां बरामद

शकुन टाइम्स संवाददाता

हरदोई। उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में यूपी बोर्ड की दसवीं (हाई स्कूल) की आज सुबह की पाली में अंग्रेजी की परीक्षा में भारी धांधली की सूचना के बाद यूपी एसटीएफ ने दो परीक्षा केंद्रों पर छापेमारी करते हुए 22 से अधिक कॉपियां लिखी हुई बरामद की है।

आरोप है कि इनमें से 20 कॉपियां एक स्कूल के प्रबंधक के घर पर लिखी जा रही थी। यूपी एसटीएफ ने इस मामले में दो परीक्षा केंद्रों पर कार्रवाई की है। एसटीएफ ने इस मामले में स्कूल के स्टाफ, साल्वरों समेत कई लोगों को हिरासत में लिया है जिनसे अभी भी पूछताछ जारी है। पूरे मामले में अभी भी एसटीएफ की टीम गहराई से जांच पड़ताल में जुटी हुई है। मौके पर

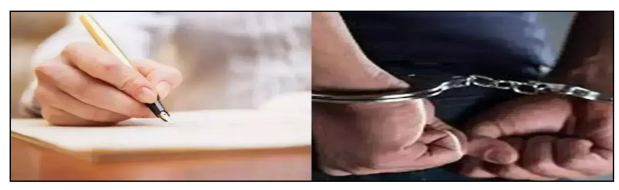

शिक्षा विभाग और प्रशासन के लोग भी मौजूद हैं जिनके द्वारा दोनों परीक्षा केन्द्रो के स्कूलों के प्रबंधक प्रधानाचार्य और केंद्र व्यवस्थापक समेत पूरे फर्जीवाड़े में लिप्त लोगों के खिलाफ मुकदमा लिखा जाने की कार्रवाई की जा रही है। एसटीएफ की छापेमारी के दौरान कई लोग मौके से फरार भी हो गए है।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि यूपी एसटीएफ को कछौना थाना इलाके में कुछ परीक्षा केन्द्रो में बाहर से कॉपियां लिखे जाने की सूचना मिली थी। जिसके बाद यूपी एसटीएफ की टीमों ने कछौना थाना इलाके के जय सुभाष महाबली इंटर कॉलेज और कटियामऊ में जगन्नाथ सिंह पब्लिक इंटर कॉलेज पर छापेमारी की। छापेमारी के दौरान पुलिस को जगन्नाथ सिंह पब्लिक इंटर कॉलेज के प्रबंधक अनिल सिंह के बगल में गांव गढ़ी में उनके घर पर 20 से अधिक कॉपियां आज की परीक्षा की लिखी जाती हुई मिली। एसटीएफ ने कुछ लोगो को मौके से कापिया लिखते हिरासत में लिया है। जबकि दूसरे स्कूल में भी एसटीएफ ने अंग्रेजी की कॉपियां लिखी हुई बरामद की है। यूपी एसटीएफ ने इस मामले में कई लोगों को हिरासत में लिया है जिनमे सालवार से लेकर स्कूल के स्टाफ और प्रबंधतंत्र के लोग भी शामिल है जिनसे एसटीएफ की टीम स्कूल बंद करके पूछताछ में जुटी हुई है। यूपी एसटीएफ की कार्रवाई के बाद जैसे ही शिक्षा महकमे को इस कार्रवाई की जानकारी हुई प्रशासन से लेकर पूरे शिक्षा महकमे में हड़कंप मच गया। जिलाधिकारी एमपी सिंह ने बताया की जिला विद्यालय निरीक्षक समेत प्रशासनिक अधिकारी को मौके पर भेजा गया है जो पूरे मामले की विस्तृत जांच पड़ताल में जुटे हुए हैं। डीएम के मुताबिक एसटीएफ की जांच के बाद पूरे मामले में दोषी लोगों के खिलाफ मुकदमा लिखवा कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सीएम योगी ने पंडित गोविंद बल्लभ पंत की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

सीएम योगी ने पंडित गोविंद बल्लभ पंत की प्रतिमा पर किया मल्यार्पण, स्मृतियों को किया नमन

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महान स्वतंत्रता सेनानी और प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री, भारत रत्न पंडित गोविंद बल्लभ पंत की पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि पंडित गोविंद बल्लभ पंत देश के स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे, जिन्होंने एक उत्कृष्ट अधिवक्ता, कुशल राजनेता और प्रशासक के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के पंत पार्क में आयोजित कार्यक्रम में सीएम योगी ने कहा कि पंडित पंत संविधान सभा के सम्मानित सदस्य थे और देश की आजादी के बाद 1954 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

के रूप में राज्य की व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद वे देश के गृह मंत्री बने और हिंदी को राजभाषा के

- पंडित गोविंद बल्लभ पंत देश के स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे- सीएम योगी
- उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में राज्य की व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई- योगी

रूप में स्थापित करने का श्रेय भी इन्हें जाता है, उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 1957 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

सीएम योगी ने कहा कि गोरखपुर विश्वविद्यालय की आधारशिला स्वयं पंडित गोविंद बल्लभ पंत ने रखी थी, उन्होंने 7 मार्च 1961 को अपने नश्वर शरीर को त्यागकर इस दुनिया को अलविदा कहा, आज उनकी पवन पुण्यतिथि के अवसर पर हम उनके स्मृतियों को नमन करते हुए प्रदेशवासियों की तरफ से उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इस अवसर पर सांसद रवि किशन, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, विधान परिषद सदस्य व भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक विपिन सिंह, महेंद्र पाल सिंह, प्रदीप शुक्ल, गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टण्डन, भाजपा के महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष विशवजिताशू सिंह आशू, डॉ सत्येन्द्र सिन्हा, देवेश श्रीवास्तव, इन्द्र मणि उपाध्याय, ओम प्रकाश शर्मा, अच्युतानंद शाही, अमिता गुप्ता, रमेश प्रताप गुप्ता, रणविजय शाही, पदमा गुप्ता, रमेश सिंह, अनुपमा पांडे, रंजूला रावत, धर्मदेव चौहान, आदि मौजूद रहे।

बहराइच में मिला सिरविहीन महिला का शव

बहराइच। उत्तर प्रदेश में बहराइच जिले के कोतवाली नानपारा क्षेत्र के ग्राम पंचायत जगन्नाथपुर में शुक्रवार सुबह नहर के निकट एक युवती का सिरविहीन शव मिलने से सनसनी फैल गयी है। स्थानीय निवासियों ने नहर के पास शव को देख इसकी सूचना पुलिस को दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, युवती का शव सरयू नहर की एक शाखा के पास स्थित मजरा पूरे बेचई में मिला। पुलिस के द्वारा दिए गए प्रारंभिक विवरण के मुताबिक, शव 10 से 20 घंटे पुराना प्रतीत हो रहा है और उसके शरीर से सिर पूरी तरह गायब है, जिससे संकेत मिलता है कि उसकी हत्या गला रेतकर की गई है। सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार सिंह पुलिस बल और फोरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू की। पुलिस क्षेत्राधिकारी प्रदुम्न सिंह ने बताया कि युवती की उम्र 20 से 25 वर्ष के बीच लग रही है और उनकी पहचान के लिए एक विशेष टीम गठित की गई है।

संक्षिप्त सामाचार

नहीं हो सकेगा विद्युत तार के नीचे होलिका दहन

कुशीनगर। विद्युत तार के नीचे एवं ट्रांसफार्मर के आस पास हो रहे होलिका दहन की प्रक्रिया को विद्युत विभाग ने बदलने के लिए जागरूकता अभियान चलाया है। इस बार होली में होलिका दहन विद्युत तार के नीचे नहीं किया जा सकेगा। विद्युत विभाग ऐसे सभी स्थानों को चिह्नित कर रहा है, जहां तार के नीचे होलिका सजाई गई है। विभागीय अधिकारी लोगों को होलिका दहन अगल-बगल करने के लिए प्रेरित करेंगे। होली से पहले जगह-जगह होलिका सजाई जाने लगी है। होलिका दहन करने वाले लोग बिजली के तारों का ध्यान नहीं दे रहे हैं। उसके नीचे ही होलिका जलाने की तैयारी मे है। होलिका दहन होने पर विद्युत के तार टूटने से हादसों का खतरा रहेगा एवं विद्युत आपूर्ति भी बाधित हो जाएगी। इसको लेकर बिजली विभाग के अलर्ट हो गए हैं। अधि ाशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड पडरौना ने बताया कि नगरीय क्षेत्रों के साथ अधिकतर ग्रामीण इलाकों में भी एलटी तारों के स्थान पर एबीसी केबल लगाई जा चुकी है। आगसे केबल गलकर टूटने की संभावना प्रबल रहती है। वहीं,11 हजार की एचटी लाइन भी गर्म होकर टूट सकती है। एक्सईएन ने बताया कि तारों के नीचे होलिका दहन को रोके जाने के लिए विभाग द्वारा सर्वे कराया जा रहा है। जहां भी तारों के नीचे होलिका दहन का स्थान होगा उसे बदलवाए जाने के लिए संबंधितों को जागरुक किया जाएगा। एक्सईएन ने सभी अवर अभियंताओं से कहा है कि यदि लोग तार के नीचे होलिका दहन करने से मान नहीं रहे हैं तो - इसके लिए पुलिस की भी सहायता ली जाएगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो पुलिस बल से ही होलिका दहन का स्थान बदलवाया जाए। इसके पूर्व जागरुक करते हुए लोगों को समझाया जाए कि तार टूटा तो बड़ी घटना हो सकती है। इस दौरान अधिशाषी अभियंता संजय सागर, उपखंड अधिकारी शशिकांत गुप्ता, अवर अभियंता शुभम गौंड, अवर अभियंता दिलीप कुमार मौर्य सहित लाइन स्टाफ धनंजय मिश्रा, अनिल श्रीवास्तव, विजय दीक्षित, संजय दुबे, त्रिपुरेश्वर दीक्षित, दीपक आदि रहे।

बोर्ड परीक्षाः हाई स्कूल अंग्रेजी में बोर्ड में 4125 ने छोड़ी परीक्षा

कुशीनगर। माध्यमिक शिक्षा परिषद उप्र द्वारा संचालित बोर्ड परीक्षा में शुक्रवार को हाई स्कूल अंग्रेजी विषय में 4125 परीक्षार्थियों ने परीक्षा छोड़ दिया। परीक्षा जिले के 152 केंद्रों पर सम्पन्न हुई। परीक्षा सकुशल संपन्न कराने के लिए प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है। कहीं से भी अनुचित साधन प्रयोग करने का अब तक समाचार नही प्राप्त हुआ। जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार को प्रथम पाली में हाई स्कूल अंग्रेजी में पंजीकृत कुल परीक्षार्थियों की संख्या 59144 थी जिसमें से बालक वर्ग से 27895 व बालिका वर्ग से 27124 परीक्षार्थी शामिल हुए जिसमें बालक वर्ग से 2608 व बालिका वर्ग से 1517 अनुपस्थित रहे।

जबकि प्रथम पाली में ही इंटर कंप्यूटर वर्ग में कुल पंजीकृत 85 थे जिसमें से एक छात्र अनुपस्थित रहे। इस तरह से कृषि वनस्पति विषय में 150 छात्रों में से 9 अनुपस्थित रहे। इंटर कृषि अर्थ शास्त्र में 142 छात्र उपस्थित रहे। इस तरह से कुल 4135 परीक्षार्थियों ने परीक्षा छोड़ी। परीक्षा की निगरानी के लिए सुपर जोनल, जोनल, सेक्टर और स्टेटिक मजिस्ट्रेट तैनात किए गए हैं। शुचिता पूर्ण और नकलविहीन परीक्षा के लिए परीक्षा केंद्रों को छह जोन और 17 सेक्टर में बांटा गया है। डीआईओएस कार्यालय में कंट्रोल रूम स्थापित है। यहां से सभी केंद्रों की सीसीटीवी कैमरों से जोड़ निगरानी की जा रही है।

पीपीगंज नगर की छात्रा मैत्रेंयी सिंह ने किया जनपद का नाम रोशन

शकुन टाइम्स संवाददाता

पीपीगंज/गोरखपुर। नगर पंचायत पीपीगंज निवासी मैत्रेयी सिंह पुत्री गोविंद सिंह तथा भाजयुमो नगर मण्डल पीपीगंज के अध्यक्ष आदर्श सिंह श्रीनेत की छोटी बहन का चयन बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा ब्लॉक हॉर्टिकल्चर ऑफीसर के पद पर प्रथम प्रयास में हुआ है मैत्रेई सिंह के चयन पर क्षेत्र के लोगों में हर्ष का माहौल है। उसके परिजनों, शुभचिंतकों ने बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। मैत्रेई शुरू से ही मेधावी है और हाई स्कूल, इण्टर,स्नातक ऑल राउंड फर्स्ट डिवीजन से उत्तीर्ण है। तथा वर्तमान में सेंट्रल यूनिवर्सिटी पूसा से परास्नातक द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत है। इसके इस सफलता पर उदयराज सिंह,विभूति शंकर सिंह,सत्यनारायण सिंह,अमित सिंह मोनू,भानू प्रताप सिंह राकेश सिंह,दीपेश सिंह,अजय

सिंह,विपिन सिंह,निखिल सिंह,संजय चौधरी,चंचल सिंह, शिप्पू मल्ल,पवन कुमार,सोनू सिंह समेत दर्जनों लोगों ने बधाई दी है।

पुलिस लाइन में पवित्र संगम जल का हुआ वितरण, श्रद्धालुओं में दिखा उत्साह

पुलिस अधीक्षक सोमेंद्र मीणा रहे मौजूद

शकुन टाइम्स संवाददाता

महाराजगंज। प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ 2025 के दौरान करोड़ों श्रद्धालु संगम स्नान का पुण्य लाभ प्राप्त करने पहुंचे थे। परंतु कई श्रद्धालु विभिन्न कारणों से इस महायोजना में शामिल नहीं हो सके। ऐसे में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप, महाराजगंज पुलिस ने एक विशेष पहल के तहत श्रद्धालुओं को पवित्र संगम जल उपलब्ध कराने की व्यवस्था की।

पुलिस लाइन में संगम से विशेष रूप से लाए गए 2000 लीटर पवित्र जल का वितरण किया गया। यह जल अग्निशमन विभाग द्वारा फायर टेंडर के माध्यम से प्रयागराज से लाया गया था। पुलिस विभाग एवं अग्निशमन सेवा विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में आम श्रद्धालु एवं पुलिस परिवारों ने

श्रद्धापूर्वक संगम जल प्राप्त किया। कार्यक्रम को सुव्यवस्थित और सफल बनाने के लिए पुलिस अधीक्षक महाराजगंज सोमेंद्र मीणा के निर्देशन में व्यापक तैयारियां की गईं। जल वितरण स्थल पर पुलिस बल और अग्निशमन विभाग के कर्मी मुस्तैद रहे, जिससे श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखा गया, और उन्होंने सरकार व पुलिस प्रशासन के इस धार्मिक प्रयास के प्रति आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस अनूठी पहल से वे श्रद्धालु भी महाकुंभ का पुण्य लाभ प्राप्त कर सके, जो किसी कारणवश प्रयागराज नहीं जा सके थे। इस कार्यक्रम ने जनमानस में आस्था और उत्साह का एक नया संचार किया और संगम के पवित्र जल को घर-घर तक पहुंचाने की परंपरा को सशक्त किया।

पासपोर्ट सत्यापन जानबूझकर लंबित रखना पुलिसकर्मी की लापरवाही मानी जाएगीः एसएसपी

आवेदनों को लंबित रखने वाले अधिकारी-कर्मचारी बख्शे नहीं जाएंगे : एसएसपी

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। पुलिस लाइन व्हाइट हाउस सभागार में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉक्टर गौरव ग्रोवर ने पासपोर्ट सत्यापन का कार्य देख रहे पुलिस कर्मचारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि पासपोर्ट सत्यापन करना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है पुलिसकर्मी इसका निर्वहन बेहद सतर्कता के साथ करें। जानबूझकर अनावश्यक रूप से आवेदनों को लंबित रखने वाले अधिकारी-कर्मचारी बख्शे नहीं जाएंगे।एसएसपी ने कहा कि पासपोर्ट सत्यापन का कार्य हर हाल में तीन दिनों के भीतर निस्तारित किया जाए। आवेदक द्वारा सूचनाएं छिपाए जाने आदि की दशा में ही

इसका उल्लेख करते हुए यह सूचना पासपोर्ट कार्यालय को भेज दी जाए। अनावश्यक रूप से जानबूझकर सत्यापन कार्य को लंबित रखना संबंधित पुलिसकर्मी की लापरवाही मानी जाएगी और उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई होगी। कहा कि आवेदन पत्र में उल्लेख किए गए विंदुओं की गहराई से छानबीन सुनिश्चित करें ताकि कोई तथ्य जांच में छूट न जाए सत्यापन का कार्य गुणवत्तापूर्ण करें अगर किसी मामले में आवेदक बताए गए पते पर नहीं मिलता है और सत्यापन कार्य संभव नहीं है तो वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए रिपोर्ट भेजें। सत्यापन के नाम पर शिकायत प्राप्त होने पर जांच करा कर आरोपित के विरुद्ध कार्रवाई होगी बैठक में पासपोर्ट नोडल एसपी अनुराग सिंह भी रहे मौजूद।

अंधियारी बाग में नमकीन फैक्ट्री पर खाद्य विभाग की छापेमारी, तीन कुंतल एक्सपायरी सामग्री नष्ट

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। अंधियारी बाग दक्षिणी में स्थित एक नमकीन फैक्ट्री पर खाद्य विभाग की टीम ने असिस्टेंट फूड कमिश्नर सुधीर कुमार सिंह के नेतृत्व में छापेमारी की। छापेमारी के दौरान फैक्ट्री में प्रतिबंधित रंगों और खराब मसालों का उपयोग करते हुए नमकीन तैयार की जा रही थी।

अधिकारियों ने बताया कि नमकीन में मिलाए जा रहे बेसन, तेल और अन्य सामग्रियों की गुणवत्ता बेहद खराब थी और साफ-सफाई का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया था। खाद्य विभाग ने मौके पर ही तीन कुंतल एक्सपायरी सामग्री को नष्ट किया और कुल पांच नमूने जांच के लिए भरे।

इसके अलावा, फैक्ट्री संचालकों के पास उचित लाइसेंस भी नहीं मिला। वे सिर्फ ?100 के पंजीकरण के आधार पर पूरी फैक्ट्री चला रहे

थे। विभाग ने फैक्ट्री को चेतावनी देते हुए लाइसेंस प्राप्त करने तक कार्रवाई करने की बात कही है। छापेमारी में गोदाम से 80 से 100 कुंतल माल भी बरामद हुआ, जिसे जांच के दायरे में लिया गया है। खाद्य विभाग जल्द ही रिपोर्ट तैयार कर आगे की कार्रवाई करेगा।

पांच लाख के आभूषण के साथ एक चोर गिरफ्तार

कुशीनगर। जनपद के कप्तानगंज पुलिस टीम ने चोरी की घटना का सफल अनावरण कर चोरी गए कुल 05 लाख रुपये कीमत के आभूषण की बरामदगी कर एक शातिर चोर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस विभाग के मीडिया सेल से मिली जानकारी के अनुसार बीते 06.03.2025 को वादी सुरज भारद्वाज पुत्र जगलाल निवासी मुडिला हरपुर थाना कप्तानगंज जनपद कुशीनगर के द्वारा थाना कप्तानगंज पर अपने घर में हुई चोरी के संबंध में सूचना दिया गया। उक्त सूचना पर घटना को संज्ञान में लेते हुए पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना कप्तानगंज पर मु0अ0सं0-28/2025 धारा 331(4), 305(1) बीएनएस में अभियोग पंजीकृत कराते हुए घटना के शीघ्र अनावरण हेतु अपर पुलिस अधीक्षक एवं क्षेत्राधिकारी कसया के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया। जिसके क्रम में 07.03.2025 को थाना कप्तानगंज पुलिस टीम द्वारा चोरी की घटना का खुलासा करते हुए एक शातिर चोर जैकी राजभर पुत्र रामईश्वर निवासी हरपुर मुडिला, भुडवा टोला थाना कप्तानगंज को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चोरी के सामान की बरामदगी की गयी है।

भरे जाएंगे जनपद में आशा के रिक्त 72 पद

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 श्रीकांत शुक्ल द्वारा प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से अवगत कराया गया है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में मिशन निदेशक के पत्र के क्रम में 72 नवीन आशाओं के चयन की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इस सन्दर्भ में ब्लाकवार एवं ग्रामवार रिक्त पदों पर आशा के चयन हेतु अनुमोदन जिलाधिकारी द्वारा दिनांक 4 मार्च 2025 को कर दिया गया है।

वर्तमान में विभिन्न विकास खण्डों में रिक्त आशा पदो के सापेक्ष कुल 72 आशाओं का चयन किया जाना है। इनमें नौतनवा विकास खंड में 19, लक्ष्मीपुर में 04, निचलौल में 08, मिठौरा में 09, बृजमनगंज में 05, फरेंदा में 04, सदर में 03, घुघली में 04, पनियरा में 13 और परतावल में 03 आशाओं का चयन किया जाना है। सीएमओ महराजगंज द्वारा निर्देशित किया गया है कि रिक्तियों की सूची, सभी आवश्यक

अर्हताओं, चयन प्रक्रिया तथा चयन हेतु निर्धारित समय सीमा सहित नियुक्ति संबंधी संपूर्ण विवरण ब्लाक एवं तहसील कार्यालय के सूचना पट पर चस्पा कर दिया जाए। इसके अतिरिक्त अधीक्षक / प्रभारी चिकित्साधिकारी की जिम्मेदारी होगी कि आशा चयन की सूचना का सघन प्रचार प्रसार, आशा मासिक बैठक एवं अस्पतालों पर सूचना चस्पा कर आशा संगिनी, आंगनबाडी, एएनएम के माध्यम से आंगनबाडी केन्द्रों, स्वास्थ्य उपकेन्द्रों एवं गांवों में उपलब्ध सूचना पट्ट, पंचायत भवन, स्कूल, राशन दुकान, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र इत्यादि के सूचना पट्टों पर नवीन आशा के चयन हेतु सूचना एव आवश्यक अर्हतायें अनिवार्य रूप से चस्पा की जायें। जिससे कि अधिक से अधिक लोगों तक नियुक्ति संबंधी जानकारी पहुंच सके। सीएमओ महराजगंज द्वारा यह भी कहा गया है कि ग्राम सभा की खुली बैठक कराते हुये शासनादेश संख्या के अनुरूप नियमानुसार चयन उपरांत जनपदस्तर पर चयनित सर्वोत्तम आशा का नाम, बैठक कार्यवृत्ति की छायाप्रति अधोहस्ताक्षरी कार्यालय मे 20 मार्च 2025 तक अवश्य उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

भाईचारे के त्यौहार को सौहार्दपूर्ण मनाए : एसपी सिटी

होली और रमजान के मद्देनजर सौहार्दपूर्ण माहौल बनाए रखने पर दिया जोर

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। आगामी त्यौहार होली और रमजान को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन ने संयुक्त रूप से पुलिस अधीक्षक नगर व सिटी मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक एनेक्सी सभागार में आयोजित की गई। बैठक में प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस विभाग, जनप्रतिनिधियों और समाज के गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक नगर अभिनव त्यागी ने सभी समुदायों से आपसी भाईचारे और शांति बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि त्योहारों का उद्देश्य सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना है, और इसे किसी भी प्रकार की अफवाहों या गलतफहमियों से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।

सिटी मजिस्ट्रेट हिमांशु वर्मा ने सभी नागरिकों से सौहार्द और एकता बनाए रखते हुए त्योहार मनाने की अपील की। उन्होंने कहा हमारे यहां गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल है, और हमें इसे बनाए रखना है। सभी धर्मों के लोग प्रेम और भाईचारे के साथ त्योहारों को मनाएं। एसपी सिटी ने बताया कि संवेदनशील इलाकों में विशेष निगरानी रखी जाएगी। होली

- तेज आवाज में डीजे बजाने पर होगी कार्यवाई, डीजे होंगे जब्तद्व सिटी मजिस्ट्रेट
- शांति समिति के सदस्य एवं विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों ने प्रशासन को पूरा सहयोग देने का दिया आश्वासन

के दौरान असामाजिक तत्वों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी, और रमजान के मद्देनजर धार्मिक स्थलों के आसपास सुरक्षा बढ़ाई जाएगी।बैठक में मौजूद शांति समिति के सदस्य एवं विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों ने प्रशासन को पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया और त्यौहारों को शांतिपूर्ण ढंग से मनाने की प्रतिबद्धता जताई। शांति समिति के सदस्यों ने तेज आवाज में डीजे बजाने से बोर्ड परीक्षाओं में छात्र-छात्राओं को पढ़ाई करने में परेशानी तथा त्योहारों पर अनावश्यक हुड़दंग न हो इस हेतु तेज आवाज में डीजे बनाने वालों पर कार्रवाई करने की मांग की जिस पर पुलिस प्रशासन को सख्त कार्यवाई कर डीजे जब्त करने के निर्देश दिए।जिला प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे सौहार्द बनाए रखें, अफवाहों से बचें और किसी भी समस्या की जानकारी तुरंत प्रशासन को दें। इस दौरान पुलिस अधीक्षक नगर अभिनव त्यागी पुलिस अधीक्षक दक्षिणी जितेंद्र कुमार ज्वाइंट मजिस्ट्रेट शिशिर सिंह सिटी मजिस्ट्रेट हिमांशु वर्मा एसडीएम बांसगांव प्रदीप सिंह उप जिला अधिकारी अमित जायसवाल एसडीएम गोला रोहित मौर्य सीओ कोतवाली ओंकार तिवारी सीओ कैंट योगेन्द्र सिंह सीओ गोरखनाथ रवि कुमार सिंह साहित जनपद की अन्य एसडीम का थाना प्रभारी पीस कमेटी के सम्मानित सदस्य जनप्रतिनिधि पार्षद मौजूद रहे।

प्रमुख बदामा पत्नी बेदी राम विधायक के कार्यकाल में जलालपुर विकासखंड में पहली बार दिखाई दी विकास की गंगा

क्षेत्र पंचायत जलालपुर की बैठक हुई संपन्न

- बैठक में प्रमुख बदामा पत्नी बेदी राम विधायक के समक्ष सदस्यों ने रखा 27 करोड़ का प्रस्ताव

शकुन टाइम्स संवाददाता

जलालपुर/जौनपुर। स्थानीय क्षेत्र के विकासखंड जलालपुर के सभागार में क्षेत्र पंचायत की बैठक संपन्न हुई। सर्वप्रथम प्रमुख की अनुमति से कार्यवाही प्रारंभ की गई। वही वहां पर उपस्थित समस्त क्षेत्र पंचायत सदस्यों के समक्ष प्रमुख जलालपुर द्वारा किए गए समस्त कार्यों को पढ़कर सुनाया गया। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के संदर्भ में जानकारी देते हुए ब्लॉक जलालपुर में वर्ष 23-24 में प्रधानमंत्री आवास बनकर पूर्ण हो गए, जबकि मुख्यमंत्री आवास के लिए 142 लाभार्थियों का आवास बनवाया गया। वर्ष 2024- 25 में ब्लॉक के 59 ग्राम पंचायत में 2542 लाभार्थियों का सर्वे कराया गया, खंड विकास अधिकारी जगदीश कुमार द्वारा सदन को यह अवगत कराया गया कि, शासनादेश के अनुसार क्षेत्र पंचायत एक ग्राम पंचायत से दूसरे ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले लाभार्थी परक ही कार्य करेंगे। इस कारण आप लोग नियमानुसार एक ग्राम सभा से दूसरे ग्राम पंचायत को जोड़ने वाला कार्यों का ही प्रस्ताव दें। जिसमें इंटरलॉकिंग , ईट खड़ंजा, ह्यूम पाइप,नाली,सोलर लाइट, हाई माक्स समेत अन्य कार्यों पर कुल लगभग 27 करोड़ का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। जिसे सदन के पटल पर रखकर कार्य का अनुमोदन कर दिया गया तथा समस्त योजनाओं की जानकारी दी गई।

वहां पर उपस्थित भारतीय सुहेलदेव पार्टी के उपाध्यक्ष एवं प्रमुख प्रतिनिधि राजीव सिंह बेदी ने क्षेत्र पंचायत सदस्यों को संबोधित करते हुए कहां की जल्द ही ब्लॉक के विभिन्न ग्राम सभाओं में 100 सोलर लाइट व 50 हाई मार्क्स लगवा दी जाएगी ,शेष अन्य जगहों पर लगवा दी गई है। बैठक को संबोधित करते हुए प्रमुख ने आए हुए समक्ष क्षेत्र पंचायत सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया,एवं उन्होंने डीपीआरओ जौनपुर पर आरोप लगाते हुए कहा कि, उनके कार्यकाल में कर्मचारियों के ट्रांसफर पोस्टिंग में अनियमित पाई गई है। कहीं-कहीं पर कर्मचारी 8 से 10 वर्षों तक एक ही स्थान पर कार्यरत हैं। अभी तक उनका स्थानांतरण नहीं हो पाया है। और वह अपनी दादागिरी कायम रखे हैं।जो शासन के मंशा के विरुद्ध है। इस अवसर पर सतीश पांडे समाज कल्याण विभाग ,दीपक शर्मा एडीओ आईएसबी, अरविंद कुमार एडीओ कृषि, शकील अहमद अकाउंटेंट, समस्त विकासखंड अधिकारी ,ग्राम प्रधान ,पत्रकार बंधुगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सुंदर ढंग से सजाने व संचालन ग्राम पंचायत अधिकारी संजय सरला गौड ने किया।

सकलडीहा में खाद्य विभाग की छापेमारी, दुकानों से लिया नमूना, व्यापार मंडल ने जताया विरोध

शकुन टाइम्स संवाददाता

सकलडीहा/ चंदौली। कस्बा में खाद्य विभाग ने छापेमारी की।इस दौरान इनलोगों ने कई दुकानों से खाद्य प्रदार्थो के नमूने संग्रहित किया। खाद्य विभाग की छापेमारी से कस्बा के व्यापारियो में हड़कंप मचा रहा।वही व्यापारियो और व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने इसका विरोध किया। कहा कि अधिकारी नमूने लेकर मानिसक और शारीरिक रूप से परेशान करते है।जो गलत है। सहायक आयुक्त खाद्य द्वितीय कुलदीप सिंह के नेतृत्व में टीम ने सकलडीहा कस्बा के परचून की दुकानों से बेसन,चिप्स सहित विभिन्न खाद्य प्रदार्थ का नमूना लिया। उन्होंने बताया कि आगामी होली पर्व पर मिलावट को रोकने के लिए खाद्य विभाग की टीम जांच कर रही है। टीम की छापेमारी से व्यापारियो में उहापोह की स्थिति रही। इस छापेमारी का व्यापारियो ने विरोध किया। व्यापार मंडल अध्यक्ष दिलीप गुप्ता और केके सोनी ने कहा कि अक्सर त्योहारों पर अधिकारी नमूना लेकर व्यापारियो का उत्पीड़न करते है। जबकि व्यापारी सभी सरकारी टैक्स देकर व्यापार कर रहा है। उसके बाद भी सैम्पल के नाम पर मनिसिक और शारीरिक रूप से परेशान किया जा रहा है। जो बिल्कुल जायज नही है। चेताया कि अधिकारी अपने रवैये में बदलाव नही करते है तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा। टीम में फूड इंस्पेक्टर मनोज कुमार गौड़, लालजीत यादव,अरबिंद कुमार, कमल निवास त्रिपाठी रहे।

उपाधीक्षक के कन्धे पर स्टार लगाकर दी गई बधाई

मऊ। शुक्रवार को पुलिस उपाधीक्षक जितेन्द्र कुमार सिंह द्वारा क्षेत्रीय प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद जनपद में पदस्थापन होने के उपलक्ष्य में पुलिस अधीक्षक इलामारन जी व अपर पुलिस अधीक्षक महेश सिंह अत्रि द्वारा पुलिस कार्यालय में उनके कन्धो पर स्टार लगाकर उन्हें बधाई दी और नये उत्साह के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। शुभकामनाएं देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

मरम्मत कार्य के चलते विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। मुहम्मदाबाद विद्युत वितरण उपखंड में मरम्मत कार्य के चलते 8 मार्च को सुबह 10 से रात्रि 8 बजे तक आपूर्ति बाधित रहेगी। उपखंड अधिकारी अमित कुमार राय ने बताया कि मुहम्मदाबाद ओल्ड फीडर पर 10 एमवीए के ट्रांसफार्मर के मेंटेनेंस कार्य के चलते राजापुर फीडर, हाटा फीडर, गौसपुर फीडर, हरिहरपुर फीडर, एवं सेपरेट 1 सेपरेट 2 के सभी फीडरों की आपूर्ति बाधित रहेगी। मरम्मत कार्य समाप्त होने के बाद आपूर्ति को बहाल किया जाएगा।

पीजी कॉलेज में दहेज उन्मूलन एवं नशा उन्मूलन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली/सकलडीहा। पीजी कॉलेज सकलडीहा चंदौली में पढ़े महाविद्यालय , बढ़े महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत दहेज उन्मूलन एवं नशा उन्मूलन कार्यक्रम मनाया गया ।महाविद्यालय के प्राचार्य ने इस कार्यक्रम के तहत अपने वक्तव्य में कहा कि यदि समाज में स्त्री पुरुष के भेद को मिटाना है और महिलाओं के महत्व देना है तो दहेज जैसी कुप्रथा को सर्वथा समाप्त करने की आवश्यकता है। 21वीं सदी में भारत को विश्व का नेतृत्व करना है उसे अपनी युवा पीढ़ी को नशा जैसे विभीषिका से दूर रखना है। कार्यक्रम के प्रारंभ में पहले दहेज प्रथा उन्मूलन एवं नशा उन्मूलन का शपथ भी लिया गया। इस कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वय यज्ञ नाथ पाण्डेय ने किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो.दयानिधि सिंह इंद्रदेव सिंह,प्रो. विजेंदर सिंह, प्रो. समीम राईन,

प्रो.महेंद्र प्रताप सिंह, डॉ राजेश कुमार यादव, डॉ.अजय कुमार सिंह यादव, डॉ. इंद्रजीत सिंह , डॉ अभय कुमार वर्मा, श्याम लाल सिंह यादव एवं बी.एड.के स्काउट गाइड के प्रतिभागीयो के साथ महाविद्यालय के कर्मचारी एवं छात्रों ने भी इस अवसर पर अपनी सहभागिता की।

दुलहीपुर महाबलपुर बचाओ संघर्ष मोर्चा के पदाधिकारी एवं पीड़ित दुकानदारों का प्रतिनिधि मंडल अधिशासी अभियंता राजेश कुमार से मिला

चन्दौली/डीडीयू नगर। आज किसान न्याय मोर्चा एवं दुलहीपुर महाबलपुर बचाओ संघर्ष मोर्चा के पदाधिकारी एवं पीड़ित दुकानदारों का प्रतिनिधि मंडल अधिशासी अभियंता राजेश कुमार से मुगलसराय स्थित लोक निर्माण कार्यालय में मिलकर दुल्हीपुर महाबलपुर में फोरलेन या एलिवेटेड रोड बनाए जाने की मांग को किसान न्याय मोर्चा के संयोजक एडवोकेट महेंद्र यादव के नेतृत्व मिला। एडवोकेट महेंद्र यादव ने कहा की 2013 कानून के अंतर्गत जो प्रावधान है उसे कानून के तहत जब तक लागू नहीं किया जाएगा तब तक किसी के घरों को नही तोड़ा जाए यदि उस कानून का सही ढंग से पालन नहीं किया जाता है तो मोर्चा आंदोलन के लिए बाध्य होगा प्रतिनिधि मंडल में एडवोकेट महेंद्र यादव डॉ आर के शर्मा एडवोकेट नसीम मुकेश शर्मा त्रिलोकी गुप्ता जगदीश सोनकर खलील घनश्याम शर्मा सरफुद्दीन बादल विश्वकर्मा रफीक रामलाल विश्वकर्मा गोपाल शर्मा इत्यादि भारी संख्या में पीड़ित दुकानदार शामिल रहे।

चार पहिया व बाइक की टक्कर में तीन घायल

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां /चंदौली। बलुआ थाना क्षेत्र के लक्ष्मणगढ़ गांव हाइवे पर शुक्रवार को चार पहिया वाहन बाइक की टक्कर में तीन युवक गम्भीर रूप से घायल हो गए।

ग्रामीणों की मदद से उन्हें चहनियां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। थाना क्षेत्र के ही सेमरा गांव निवासी 18 वर्षीय विकास कुमार, 14 वर्षीय शुभम कुमार और 15 वर्षीय सावन कुमार एक ही बाइक पर सवार होकर चहनियां जा रहे थे। की लक्ष्मणगढ़ गांव स्थित पेट्रोल टंकी के पास जैसे ही अपने बाइक में तेल भराने के लिए घूमे चार पहिया वाहन की टक्कर से तीनों घायल हो गए।

ग्रामीणो की मदद से उन्हें चहनियां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा जहा प्रभारी चिकित्साधिकारी डा. रितेश कुमार ने इलाज कर विकास की हालत गम्भीर देख जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

भगवान प्रभु श्रीराम ने भी शिक्षा के लिए घर व राजसुख त्यागा था- विनीत सिंह

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनिया। क्षेत्र के पलिया स्थित डीएचएसएस इंटरनेशनल स्कूल में उत्सव कार्यक्रम का शुक्रवार को उद्घाटन मिर्जापुर एमएलसी विनीत सिंह ने फीता काटकर किया। विद्यालय के प्रबन्धक अरबिंद सिंह और निदेशक अभिषेक सिंह ने मुख्य अतिथि और अन्य अतिथियों को अंगवस्त्रम-स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि एमएलसी मिर्जापुर विनीत सिंह ने कहा कि दूर दराज इलाके में यह विद्यालय शिक्षा के लिए एक मिसाल बनेगा।आज विद्यालयों में जिस ढंग से फीस की लूट मची है देहात में यह महंगी शिक्षा सम्भव नही है। यहां यह विद्यालय समाजसेवा की धारणा से खुला है। दुनिया मे सबसे बड़ी धन ज्ञान है। हर लोग अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहते है किंतु फीस के आगे लोग लाचार हो जाते है। क्योंकि देहात से कमाई नही समाजसेवा के रूप में शिक्षा देना पड़ेगा। सबसे ज्यादा बच्चो को केवल एडमिशन करा देने से ही नही वे आज विद्यालय में क्या पढ़े है उसे ध्यान देने की जरूरत है। जो गुरु के कठिन परिश्रम को सह नही सकता है वह कभी सफल नही हो सकता है। आज समय मूल्यवान है उसे व्यर्थ न गवाएं। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक डॉ. आर खन्ना, बंशीधर पाठक, धनंजय सिंह,सन्तोष सिंह, अजय सिंह, डॉ. हरिशंकर सिंह, यशवंत सिंह, हलवन्त सिंह, बृजभूषण सिंह, सूर्यजीत सिंह, अभिताभ सिंह आदि उपस्थित रहे। अध्यक्षता धनंजय सिंह और संचालन ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी ने किया।

बेगूसराय बिहार बजट जनविरोधी भाकपा माले ने बजट की प्रतियां जलाकर जताया विरोध

पटना। बजट की दिशा बिहार की बदहाली दूर करने की नहीं- भाकपा माले

बिहार की संघर्षशील ताकतों की लोकप्रिय मांगों को दरकिनार करने वाले 2025-26 के बजट के खिलाफ भाकपा माले के राज्यव्यापी कार्यक्रम के तहत बेगूसराय में विरोध मार्च निकाला गया। इस दौरान बजट की प्रतियां भी जलाई गईं। आज बिहार मानव विकास सूचकांक के सभी पैमाने पर पिछड़ गया है। बिहार की जगह निचले पायदान पर बनी हुई है। यह स्थिति तब तक नहीं सुधरेगी जब तक बजट में राज्य की बुनियादी जरूरतों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। लाखों लाख स्कीम वर्कर्स बहुत कम मानदेय पर काम करने को मजबूर हैं।

सम्पूर्ण मानवता के लिए आध्यात्मिक अत्यंत लाभप्रद

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनिया/चंदौली। श्रीराम चन्द्र मिशन हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट के संयुक्त तत्वाधान में एक मिशन सहज मार्ग के संस्थापक बाबूजी महराज की 125वी जयंती के अवसर पर ग्रामीण स्तर पर तीन दिवसीय एकात्म अभियान ग्राम सभा महरखा और बरईपुर में आयोजन किया गया। इस अभियान का उद्देश्य ध्यान और योग के माध्यम से लोगो की विचार धारा में सकारात्मक परिवर्तन करते हुए उनके आचरण में परिवर्तन करना है। कार्यक्रम में योग, तनाव मुक्ति्त रिलैक्सेशान, ध्यान सत्र, मानसिक सफाई तथा प्रार्थना,प्राकृतिक कृषि को बढावा देने हेतु मूलभुत कृषि तकनिकी का उपयोग करते हुए बायोचार पर विशेष प्रशिक्षण,बच्चो के सम्पूर्ण संज्ञात्मक विकास हेतु सरल तकनीक आदि पर चर्चा हुआ । प्रशिक्षक डॉ. श्याम नारायण ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रदेश के 15 हजार से अधिक गाँवो में भारत सरकार के

सास्कृति मंत्रालय के माध्यम से नि:शुल्क अयोजित किया जा रहा है जिसमे हार्टफुलनेस के अंतर्राष्ट्रीय गाइड कमलेश डी पटेल (दाजी) चाहते है की देश के कोने कोने में आध्यात्म पहुचे, सम्पूर्ण मानवता के लिए अध्यात्मिक ध्यान अत्यंत लाभप्रद है, योग और ध्यान का नियमित अभ्यास से हमारा सर्वंगिण विकास में मदद करता है इस अवसर पर डॉ. सुभाष यादव, एस.पी.दुबे,अमित कुमार मौर्य,राम लक्ष्मन, उपेंद्र यादव,दीपक त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे ।

53 वर्षीया महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

रतनपुरा/मऊ। हलधरपुर थाना क्षेत्र के पिंडोहरी ग्राम पंचायत के भालूपुर पूरवा में बृहस्पतिवार की सायं लगभग 4:00 बजे 53 वर्षीय महिला ने फांसी लगाकर रहस्यमय परिस्थितियों में अपनी इहलीला समाप्त कर ली। भालूपुर निवासीनी समलावती देवी 52 बर्ष पत्नी बंधु राम जो गांव के निकट ही अंबेडकर विद्यालय गोबरिया में अध्यापक हैं। बृहस्पतिवार की सांय जब विद्यालय से छुट्टी होने के बाद अपने घर पहुंचे तो घर का दरवाजा अंदर से बंद था। घर में मात्र पत्नी ही थी। जब काफी प्रयास के बावजूद भी दरवाजा नहीं खुला तो इन्होंने उत्तर प्रदेश डायल 112 नंबर पुलिस को सूचित किया। 112 नंबर पुलिस मौके पर पहुंची तो सीढ़ी के सहारे एक व्यक्ति को अंदर भेज कर मुख्य दरवाजा खोलवाया, और इसके बाद घर के कमरे में समलावती देवी पंखे के हुक से साड़ी के फंदे से लटक कर मृत अवस्था में मिली। यह खबर जंगल की आगकी तरह पूरे गांव में फैल गई। बड़ी संख्या में लोग एकत्र हो गए, और पुलिस के सामने शव को उतारा गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर थाने आई।

खाद्य विभाग ने लिए 11 नमूने

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। जनपद में आगामी होली पर्व के अवसर पर मिलावटी खाद्य एवं पेय पदार्थों के विक्रय पर प्रभावी रोकथाम के उद्देश्य सें अभिसूचना आधारित प्रभावी विषेश अभियान चलाकर कुल 11 नमूना संग्रहित किया गया एवं सूजी, आटा (अमृत भोग ब्राण्ड) निर्माता के 26 किलोग्राम के मूल पैक में व मटर दाल (राजश्री ब्राण्ड) का 1229 किलोग्राम अनुमानित मूल्य रू0-49017/- (उन्चास हजार सत्रह रूपये मात्र/-) का खाद्य पदार्थ सीज किया गया, विस्तृत विवरण निम्नवत है- फर्म-षिव षक्ति सुगर सप्लायर्स युसुफपुर मार्केट मुहम्मदाबाद गाजीपुर स्थित के प्रतिश्ठान से सूजी का 01 नमूना संग्रह करके 47 किलोग्राम सूजी सीज किया गया जिसका अनुमानित मूल्य रू0-1645/- है। आटा (अमृत भोग ब्राण्ड) निर्माता के 26 किलोग्राम के मूल पैक में का 01 नमूना संग्रह करके 284 किलोग्राम आटा (अमृत भोग ब्राण्ड) सीज किया गया जिसका अनुमानित मूल्य रू0-9656/- है। मटर दाल (राजश्री ब्राण्ड) का 01 नमूना संग्रह करके 898 किलोग्राम मटर दाल (राजश्री ब्राण्ड) सीज किया गया जिसका अनुमानित मूल्य रू0-37716/- है। षालू स्वीट हाउस कठवामोड़ के प्रतिश्ठान से- मिल्क केक का 01 नमूना व पनीर का 01 नमूना, राज किराना स्टोर भदौरा, जमानिया, गाजीपुर स्थित अफजल के प्रतिश्ठान से- बेसन का 01 नमूना एवं चना का सत्तू का 01 नमूना, फूली दिलदारनगर, गाजीपुर स्थित कयामुद्दीन के प्रतिश्ठान से- पापड़ का 01 नमूना व सरसों तेल का 01 नमूना। चौरसिया इण्टरप्राइजेज, जमानिया कस्बा, गाजीपुर स्थित राजेष कुमार चौरसिया के प्रतिश्ठान से- मिर्च पाउडर का 01 नमूना व हल्दी पाउडर (भोला इण्दिष ब्राण्ड) का 01 नमूना लिया गया। संग्रहित नमूनें खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला, उ0प्र0 प्रेषित किये जा रहें है, जॉच रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम-2006 के अन्तर्गत विधिक कार्यवाही की जायेगी।

नमूना संग्रह की कार्यवाही सुमन कुमार मिश्र मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी गाजीपुर एवं गुलाबचन्द गुप्त वरिश्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों डॉ0 तूलिका षर्मा, राजीव कुमार सिंह, विरेन्द्र यादव, पंकज कुमार कन्नौजिया एवं अरविन्द प्रजापति की टीम द्वारा की गयी।

हर हर महादेव उद्घोष के साथ नागा साधुओं का दल पहुंचा रामेश्वर महादेव धाम

शकुन टाइम्स संवाददाता

- पंचकोशी यात्रा के दौरान नागा साधुओं का कई जगहों पर पुष्प वर्षा कर किया भव्य
- पैदल यात्रा करते पंचकोशी यात्रा के तीसरे पड़ाव रामेश्वर पहुंचे नागा साधुओं का दल

वाराणसी। श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी शिवाला घाट के बैनर तले श्री अस्थानेश्वर महादेव मंदिर कुरूक्षेत्र हरियाणा अखाड़ा के नागा साधुओं का दल हर हर महादेव उद्घोष के साथ शुक्रवार को पंचक्रोशी के तीसरे तीर्थ पड़ाव स्थल रामेश्वर महादेव धाम पहुंचा। यात्रा रामेश्वर धाम पहुंचते ही मंदिर के पुजारी अनूप तिवारी व जनप्रतिनिधियों ने पुष्प वर्षा कर दल का भव्य स्वागत किया।पंचकोशी यात्रा पर निकले नागा साधु संतों का दल जंसा के आगे पहुंचते ही देहली विनायक मोड़ के पास रोहनिया के विधायक सुनील पटेल ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। वही जगापट्टी पंचायत भवन मोड़ के पास पंचक्रोशी मार्ग पर मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित ग्राम प्रधान घनश्याम सिंह यादव के नेतृत्व में निगरानी समिति के युवाओं की टीम के द्वारा पुष्प वर्षा करते हुए बिसलरी (पानी) व पारले बिस्कुट का वितरण किया गया। पैदल पंचक्रोशी यात्रा में श्री महंत रवींद्रपुरी,रमेश गिरी, मृत्युंजय भारती, मनोज गिरी, गंगा गिरी, प्रेमपुरी, वंशीपुरी, विनोद गिरी, शंकरपुरी (सभी महंत) व उमाशंकर गिरी, रवि गिरी, विश्वनाथपुरी, ब्रह्म नारायण पुरी, मनसुख गिरी, शंभू गिरी, राजेंद्र भारती, रमाशंकर गिरी (सभी कार्यावारी) सहित लगभग दो सौ नागा साधुओं का दल को ग्रामीणों हर हर महादेव का नारा लगाते हुए फूलों की पंखुड़ियो की वर्षा करते हुए माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। नागा साधु के चरणों में शीश झुकाकर आशीर्वाद लिया। नागा साधु संतों दल रामेश्वर महादेव मंदिर पहुंचते ही मंदिर के पुजारी अनूप तिवारी के साथ दर्जनों कर्मकांडी ब्राह्मण व क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के द्वारा मंत्रोचार व हर हर महादेव के उद्घोष के साथ स्वागत किया गया।

इसके बाद संतों का दल रामेश्वर महादेव मंदिर में विधिवत पूजन अर्चन करने के साथ धर्मशाला में विश्राम के लिए चले गये।संतों का दल रामेश्वर से शनिवार को सुबह अगले तीर्थ पड़ाव शिवपुर के लिए प्रथम कर गया।नागा साधु संतों के सुरक्षा में लगे एसीपी राजातालाब अजय कुमार श्रीवास्तव,एसओ जंसा दुर्गा सिंह,चौकी प्रभारी जगदम्बा सिंह सहित दर्जनों एसआई,पुलिस दल उनकी सुरक्षा व्यवस्था में लगे रहे। स्वागत के दौरान विपिन पाण्डेय,संतोष पटेल, राहुल सिंह, डॉ नरेंद्र पटेल, डॉक्टर प्रेम ,गोविंद पटेल, चंद्रमा प्रसाद, राजकुमार, कृष्ण कुमार यादव,

अभिषेक माली, रोहित गोंड, अरुण कुमार, बृजेश कुमार सरोज, सत्यम सिंह, सतीश कुमार सरोज, अभिषेक यादव उर्फ शनि, श्यामजीत उर्फ साधु,सुनील माली उर्फ जग्गू,राधेश्याम गुप्ता सहित सैकड़ों लोग शामिल रहे।

रमजान के पहले जुमे पर वक्फ बिल के विरोध में प्रदर्शन

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में रमजान के पहले जुमे पर नमाज के बाद वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ प्रदर्शन हो रहा है। मस्जिदों के बाहर विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई है। बड़ा इमामबाड़ा स्थित आसिफी मस्जिद में शिया धर्म मौलाना कल्बे जव्वाद ने नमाज पढ़ाई। मौलाना ने कहा वक्फबिल से मुस्लिम समुदाय के अधिकारों को छीनने का प्रयास किया जा रहा। विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं मौलाना कल्बे जव्वाद ने नारा लगाया श्वक्फ बिल नहीं सांप का बिल है। मौलाना ने कहा हुसैनाबाद ट्रस्ट जिला अधिकारियों के निगरानी में है। वह बेईमानी कर रहे हैं। यह वक्फ संशोधन बिल नहीं है, बल्कि वक्फ

बर्बादी बिल है। सारी शर्तें मस्जिदों के लिए क्यों लगाई जा रही, मंदिर से 400 किलो सोना चोरी हो गया सरकार उसका पता क्यों नहीं लगा पा रही है। मौलाना ने कहा कि क्या किसी मंदिर का वक्फनामा है। किसी मंदिर के पास कागज है। मंदिरों से कागज क्यों नहीं मांग रहे हो सारे कागज हम ही लोगों से क्यों मांगे जा रहे हैं। लाखों मंदिर सरकारी जमीन पर बने हैं। लक्ष्मीबाई अस्पताल में मंदिर बनाया गया। कई मंदिर वक्फ की जमीन पर बने हैं उसकी जांच हो। हमारा काम गलत चीजों का विरोध करना है वो हम करते रहेंगे। वक्फ बिल के समर्थन में जो दो-चार मुसलमान दिखाए जाते हैं वह गद्दार और चापलूस हैं। वो सरकार के पिट्ठू हैं। मौलाना ने कहा कि ये जो वक्फ बिल आया है ये कांग्रेस का बोया हुआ बीज है। कांग्रेस भाजपा की शिष्य है जो काम उसने मुसलमानों के विरुद्ध अधूरा छोड़ा था उसे बीजेपी पूरा कर रही है। कांग्रेस हमेशा मुसलमानों के विरोध में रही है। देश की सबसे बड़ी गद्दार जमात, पार्टी का नाम कांग्रेस है। उसने वाक आउट करके धोखा दिया। कल्बे जव्वाद ने कहा कि वक्फ बिल दो लोगों की गद्दारी से पास हो सकता है। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू यह लोग अगर सरकार का साथ ना दे सरकार के पिट्ठू ना बने रहें। क्रॉस वोटिंग करें तो बिल पास नहीं होगा। हम सभी से अपील करते हैं बिल पास न होने दिया। इसके विरोध में चारों ओर प्रदर्शन होना चाहिए।

मां से किया झगड़ा, 5वीं मंजिल से युवती कूदी, मौत

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में सिल्वर लाइन अपार्टमेंट में 27 साल की युवती मोहनी ने सुसाइड कर लिया। मां और बहन से विवाद के बाद उसने 5वें फ्लोर से छलांग लगा दी। आवाज सुनकर सिक्योरिटी गार्ड और अपार्टमेंट के लोग पहुंचे तो वह खून से लथपथ पड़ी थी। लोग उसे लोहिया अस्पताल लेकर पहुंची। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा दिया है।अपार्टमेंट में मोहिनी फ्लैट नंबर-501 में रहती थी। यहां उसके साथ मां और छोटी बहन भी रहती हैं। पिता का कुछ साल पहले देहांत हो गया था। बहन रागिनी सिटी मांटेसरी स्कूल में टीचर हैं। इंस्पेक्टर बीबीडी अजय नारायण सिंह ने बताया कि मोहिनी डिप्रेशन में थी। इसी के चलते गुरुवार रात 11.30 बजे उसने छलांग लगा दी। गुरवार को मां और बहन से किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। इसके बाद उसने हाथ की नस काटने का प्रयास भी किया था। सोसाइटी के लोगों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि मोहिनी कुछ करती नहीं थी, मां हाउसवाइफ हैं। छोटी बहन की सैलरी से ही घर का खर्चा चलता है। कुछ दिन पहले भी मोहिनी ने हाथ की नस काटने का प्रयास किया था। घर में आए दिन झगड़ा होता था। लेकिन इन लोगों का सोसाइटी में किसी से ज्यादा मिलना जुलना नहीं रहता था। लोगों ने बताया कि घटना के बाद घर में मौजूद छोटी बहन रागिनी भी कैंची और चाकू लेकर बैठी थी। वो अपने हाथ की नस काटने का प्रयास कर रही थी। हालांकि आसपास के लोगों ने उसे बचा लिया। चाकू और कैंची छीन लिया। इसके बाद में रागिनी मंदिर के पास बैठकर रोती रही। पास से जैसे ही कोई हटाता तो रागिनी वापस धारदार हथियार खोजने लगती।

संक्षिप्त सामाचार

नगर निगम सफाईकर्मी को व्यक्ति ने पीटा, गाजीपुर थाने पर कार्रवाई के लिए प्रदर्शन

लखनऊ। लखनऊ के इंदिरानगर में लाल बहादुर शास्त्री वार्ड में सफाई कर रहे सफाई कर्मी को एक व्यक्ति ने पीट दिया। इसके बाद नाराज सफाई कर्मियों ने गाजीपुर थाने पर पहुंचकर प्रदर्शन किया है। सुजीत कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया है कि ट्रांसफार्मर वाली गली में कूड़े का भरान कर रहे थे। इस दौरान पेड़ की डाल और पत्ती एक गाड़ी में टच कर गई। इस दौरान अलार्म बजने लगा। आरोप है कि इसके बाद चार पहिया सवार व्यक्ति ने उसके साथी ललित वाल्मिकी और उसे लात घूंसे से पीटने लगा। इस दौरान जान से मारने की धमकी भी दी। घटना के बाद गाजीपुर थाना पर पहुंचे सफाईकर्मियों ने कार्रवाई की मांग की है।

इस्लामिक सेन्टर आफ इण्डिया में जरूरतमन्दों में ''तोहफा-ए-रमजान'' बॉटा

लखनऊ। रोजा एक ऐसी इबादत है जिसके जरिए इंसान के अच्छे अख़लाक़ की शिक्षा भी होती है। रोजे से खौफखुदा, तक़वा, सब्र, हमदर्दी, गमख्वारी, कुव्वतबर्दाशत और सहायता जैसे अच्छी विशेषतायें पैदा होती हैं। रोजेदार को दूसरे की भूक प्यास का एहसास होता है। वह चाहता है कि जो लोग भूके प्यासे और जरूरतमन्द हैं उनकी मदद करें। वह तमाम लोग खुशनसीब हैं जो रमजान माह में जरूरतमन्दों की सहायता करते हैं। खुदा पाक इस पवित्र माह में हर नेकी का सवाब कई कई गुना बढ़ा कर देता है। इन एहसास व जज्बात के साथ इमाम ईदगाह लखनऊ मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली चेयरमैन इस्लामिक सेन्टर आफइण्डिया फरंगी महल ने सेन्टर में जमा हुई औरतों को 'तोहफा-ए-रमजान'' बॉटा। इस तोहफा-ए-रमजान में चावल, आटा, दाल, बेसन, चीनी, चाय पत्ती, तेल, चना, नमक, खुजूर जैसी जरूरी चीजें शामिल हैं। मौलाना फरंगी महली ने इस अवसर पर मिल्लत-ए-इस्लामिया के मालदार लोगों से अपील की कि वह खैर के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें। विशेष कर इस पवित्र माह में मिल्लत के आर्थिक हालात सुधारने की ठोस उपाय करें। शैक्षिक व मिल्ली इदारों की भरपूर सहायता करें। बेरोजगारों को रोजगार अवसर करायें। होनहात विद्यार्थियों की हिम्मत बढ़ायें। गर्ज की मिल्लत की कामयाबी और खुशहाली के लिए अमल करें।

नगर निगम में समाधान दिवस पर हंगामा लोग बोले-कनेक्शन नहीं फिर भी आया बिल

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम में समाधान दिवस पर लोगों को समाधान नहीं मिला तो जमकर हंगामा किया। लोगों ने शिकायत की है कि पानी का कनेक्शन न होने के बावजूद उन्हें बिल भेजे जा रहे हैं। उनका घर अभी नगर निगम क्षेत्र में नहीं है। इसके बाद भी 2014 से बिल भेजा जा रहा है। महापौर सुषमा खर्कवाल और नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह लोगों की शिकायत सुन रहे थे। वृंदावन योजना से पहुंचे वकील ने उन्हें बताया कि मार्च 2023 में बनी सड़क के साथ नाली नहीं है। इस वजह से घरों में पानी घुसता है। वकील को जब लगा कि समाधान तत्काल नहीं होगा तो हंगामा शुरू कर दिया। कहा कि जोन-8 में मैनेज करने के नाम पर नगर निगम के कर्मचारी रिश्वत मांगते हैं। इधर, तेलीबाग के रहने वाले तेजेश्वर उपाध्याय ने बताया कि उनका पानी का कनेक्शन नहीं है, इसके बाद भी बिल भेजा जा रहा है। वृंदावन योजना सेक्टर-11 के राजकुमार सिंह ने शिकायत की। कहा कि अचानक घर का हाउस टैक्स 42,525 रुपए भेज दिया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कस्तूरबा विद्यालय की बालिकाओं से किया गया संवाद

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। शुक्रवार को जिला प्रोबेशन अधिकारी स्मिता सिंह के निर्देश में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रेरणादायक महिलाओं के साथ संवाद का आयोजन कस्तूरबा विद्यालय की बालिकाओं के साथ किया गया।

जिसमें बालिकाओं द्वारा प्रेरणादायक महिलाओं से प्रेरणा ली गई भविष्य को उज्वल बनाने में क्या क्या संघर्ष कर आज यह किस तरह आगे बढ़े जीवन में घबराएं नहीं संयम रखें विवेक कार्य करें और अपने शिक्षा को अपने जीवन शैली में उतरकर अपना भविष्य बनाएं इसके अतिरिक्त सोनिया वन स्टॉप सेंटर मैनेजर द्वारा विभाग के अन्तर्गत संचालित कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में उपस्थित वन स्टॉप सेंटर परामर्शदाता रविता चौहान ,कस्तूरबा विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

नगर निगम ने पर्यटन भवन को किया सील, 43 लाख हाउस टैक्स बकाया

लखनऊ। नगर निगम ने शुक्रवार सुबह पर्यटन भवन को सील कर दिया। जोन 4 के अधिकारी संजय यादव और टैक्स सुपरिटेंडेंट अनुराग उपाध्याय की टीम ने यह कार्रवाई की है। पर्यटन भवन पर कुल 43 लाख 92 हजार रुपए का हाउस टैक्स बकाया था। नगर निगम की तरफसे इसको लेकर कई बार नोटिस भी दी जा चुकी थी। बावजूद इसके टैक्स जमा नहीं हुआ था। सीलिंग की कार्रवाई के बाद पर्यटन भवन ने 15 लाख रुपए जमा कर दिया है। इसके बाद नगर निगम ने सीलिंग खोल दी।

मुख्य कर अधिकारी अशोक कुमार सिंह ने बताया कि बकाया करीब 27 लाख रुपए जमा करने के लिए पर्यटन भवन ने सोमवार तक का समय लिया है। अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह ने बताया कि पूरे शहर में अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है।

एक और संस्था ने बढ़ाया हाथ अग्रवाल महासभा (रजि0) हापुड़ की महिला विंग ने 30 क्षय रोगी लिए गोद

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। शुक्रवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 सुनील कुमार त्यागी के कुशल निर्देशन में एवं जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ राजेश सिंह के नेतृत्व में जनपद के 30 क्षय रोगियों को शुक्रवार को जिला महिला चिकित्सालय कोठी गेट हापुड़ के सभागार में पोषण पोटली देकर गोद लिया गया जनपद में अनेक स्वयं सेवी संस्थाओं एवं औद्योगिक घरानों ने अब तक अनेकों क्षय रोगियों को गोद लिया है इसी क्रम में जनपद हापुड़ के अग्रवाल महासभा रजिस्टर्ड हापुड़ एवं अग्रवाल महासभा महिला मंच द्वारा 30 क्षय रोगियों को पोषण पोटली का वितरण किया गया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अग्रवाल महासभा महिला मंच की अध्यक्ष श्रीमती अर्चना कंसल जी एवं मंच की सेक्रेटरी स्वाति गोयल व

वित्तनियंत्रक मंजू गोयल रही इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील कुमार त्यागी ने जनपद के अन्य औद्योगिक घरानों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से इस कार्य में बढ़-चढ़कर सहयोग करने का आवाहन किया इस अवसर पर अग्रवाल महासभा रजिस्टर्ड हापुड़ की महिला मंच की डॉक्टर श्रीमती शीरान अग्रवाल, श्रीमती निधि आर्य, श्रीमती अनीता गुप्ता, श्रीमती रश्मि अग्रवाल, श्रीमती अदिति अग्रवाल, श्रीमती पूनम अग्रवाल, श्रीमती भारती गुप्ता, श्रीमती आंचल सिंगल आदि सदस्य उपस्थित रहे।

प्रतापगढ़ से आए परिवार ने सीएम आवास के पास किया आत्मदाह का प्रयास

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। गौतमपल्ली थाना अंतर्गत कालीदास मार्ग पर मुख्यमंत्री आवास के पास ला-मार्टिनियर चौराहे पर उस वक्त अफरा-तरफी मच गई। जब एक परिवार के साथ युवक ने खुद पर ज्वलनशील पदार्थ उड़ेल लिया और आत्मदाह की कोशिश करने लगा। वीवीआईपी मूवमेंट तैनात सुरक्षाकर्मियों को युवक को आत्मघाती कदम उठाने से पहले पकड़ लिया। इसके बाद सुरक्षाकर्मियों ने आलाधिकारियों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे आधिकारियों ने पीड़ित परिवार से पूछताछ की, तो पता चला कि दबंगों से परेशान होकर पीड़ित परिवार ने आत्मघाती कदम उठाया है। हालांकि, पुलिस पीड़ित से पूछताछ कर रही है।

गौतमपल्ली प्रभारी निरीक्षक पंकज कुमार के मुताबिक, मूलरूप से प्रतापगढ़ जनपद के राजनीगंज फटनपुर सुरवा मिश्रपुर गांव निवासी राजन मिश्र शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे सपरिवार ला-मार्टिनियर चौराहे पर पहुंचा। इसके बाद पीड़ित ने खुद पर ज्वलनशील पदार्थ उड़ेलकर आत्मदाह का प्रयास किया। इस बीच सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों ने उसे पकड़ लिया। पूछताछ के दौरान पीड़ित ने बताया कि गांव के रहने वाले शारदा प्रसाद, हरिशंकर, प्रेमनारायण समेत कई लोग उन्हें परेशान कर रहे हैं। आरोप है कि यह सभी दबंग किस्म है। दबंगई के बल पर आरोपितों ने उनकी जमीन पर कब्जा कर लिया है। इस सम्बन्ध में पीड़ित ने थानास्तर से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों से भी शिकायत की। बावजूद इसके सुनवाई नहीं हुई। बताया कि वह अधिकारियों के कार्यालय में चक्कर लगाते थक चुका है। लिहाजा, न्याय पाने के लिए पत्नी रेखा और दो बेटियों को लेकर लखनऊ पहुंचा। जहां पीड़ित ने आत्मदाह करने का फैसला किया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि पीड़ित परिवार से जानकारी लेकर प्रतापगढ़ पुलिस ने वार्ता की गई है। मेडिकल परीक्षण के बाद पीड़ित परिवार को प्रतापगढ़ भेजा रहा है।

मायावती ने बीएसपी कार्यकर्ताओं की दी सलाह

कहा, कांग्रेस के बड़बोले नेता से सावधान रहने की जरूरत

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती और उनके भतीजे को लेकर कई दिनों से टिप्पणी करके सुर्खियों में रहे पूर्व सांसद उदित राज का बिना नाम लिए बसपा सुप्रीमो ने कांग्रेस पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि बहुजन समाज' के हित को समर्पित सामाजिक संगठनों द्वारा कांग्रेस के एक बड़बोलध्बिगड़ैल नेता के बीएसपी पार्टी व मूवमेन्ट तथा उसके आयरन लेडी नेतृत्व के विरुद्ध टीका-टिप्पणी करने की तीव्र निंदा व भर्त्सना करके अपनी जागरूकता का परिचय देने का स्वागत। लोगों से भी सावधान रहने की अपील।

उन्होंने कहा कि दिनांक 15 मार्च को मान्यवर कांशीराम जी की जयंती

पूरे मिशनरी भावना के साथ मनाने की अपील की है। पार्टी के इन कार्यक्रमों को लेकर लखनऊ स्थित 'बहुजन समाज प्रेरणा केन्द्र' जहां उनकी अस्थि कलश स्थापित है व यूपी स्टेट कार्यालय का भी आज सुबह मेरा दौरा व निरीक्षण किया गया। उन्होंने इसके अलावा, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा पहले कुछ मजारों व धार्मिक स्थलों को ध्वस्त किए जाने के बाद अब राजधानी देहरादून में 11 प्राइवेट मदरसों को सील किए जाने की खबर की काफी चर्चा। सरकार धार्मिक भावनाओं को आहत पहुँचाने वाली ऐसी द्वेषपूर्ण व गैर सेक्युलर कार्रवाई से जरूर बचे।

महिला दिवस की पूर्व संध्या पर महिला अधिकारों से कराया गया एवं वितरित किया गया प्रेरक साहित्य

लखनऊ। महामहिम राज्यपाल के आह्वान पर शिया महाविद्यालय में पढ़े विश्वविद्यालय-बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय-बढ़े महाविद्यालय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग कर कार्यक्रम के प्रथम चरण में सामूहिक पुस्तक पाठ किया। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में कार्यक्रम में सम्मिलित शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा नशा मुक्त भारत एवं दहेज मुक्त भारत की शपथ ली गयी। इसी के साथ महिला दिवस की पूर्व संध्या पर डॉ0 रॉबिन वर्मा द्वारा छात्र-छात्राओं को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं संविधान में दिये गये महिला अधिकारों से अवगत कराया और कार्यक्रम के अन्त में डॉ0 वर्मा द्वारा संविधान की संक्षिप्त पुस्तिका, महिलाओं से जुड़ा प्रेरक साहित्य एवं स्टेशनरी वितरित की गयी। प्राचार्य प्रो0 एस0एस0आर0 बाकरी ने बताया कि नशा एवं दहेज समाज की वो कुरीति है जिसको समाज से मिटाया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

एलडीए में रेरा के मामलों के लिए कमेटी गठित

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण में अब रेरा के मामलों को गंभीरता से लिया जाएगा। इसे लेकर लिए वीसी प्रथमेश कुमार ने चार सदस्यीय कमेटी गठित की है। जो आवंटियों से बात करके सहमति के आधार पर मामलों का निस्तारण करेगी। कमेटी ने सुनवाई के दौरान चार मामलों में करीब 33 लाख रुपये का भुगतान किया है। एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार ने बताया कि रेरा से जुड़े प्रकरणों की समीक्षा की तो 208 मामले लंबित मिले। इन मामलों की वजह से एक तरफतो प्रभावित आवंटी परेशान थे। वहीं, दूसरी तरफ प्राधिकरण को ब्याज व अन्य खर्चों का अतिरिक्त खर्च झेलना पड़ रहा था। ऐसे में रेरा के मामलों को निस्तारित करने के लिए अपर सचिव ज्ञानेन्द्र वर्मा की अध्यक्षता में वित्त नियंत्रक दीपक सिंह, मुख्य अभियंता अवनीन्द्र कुमार सिंह, प्रभारी अपार्टमेंट देवांश त्रिवेदी व सह प्रभारी रेराध्उप सचिव माधवेश कुमार की चार सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया है।

आरटीओ ऑफिस पर डीएम का छापा, दलाल भागे

कॉमर्शियल बिल्डिंग सील, 3 हिरासत में

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ डीएम विशाख जी अय्यर शुक्रवार को अचानक आरटीओ ऑफिस पहुंच गए। वहां उनके साथ गई पुलिस टीम ने दलालों को पकड़ना शुरू कर दिया। यह देखते ही दलाल भागने लगे। इस दौरान तीन को हिरासत में ले लिया गया। कुछ दलाल बचकर भाग निकले। डीएम ने उनके पीछे पुलिस लगा दी। डीएम ने आरटीओ के पास बन रही अवैध बिल्डिंग को तुरंत सील करने के निर्देश दिए। साथ ही बिना जनसेवा केंद्र के लाइसेंस वाली कई दुकानों को भी सील करने का आदेश दिया है। डीएम ने आरटीओ कार्यालय का एक घंटे तक निरीक्षण किया। वहां पहुंचे आवेदकों से पूछताछ की। उनसे अवैध वसूली करने वालों के बारे में भी जानकारी ली। डीएम के साथ डीसीपी साउथ भी थे। डीएम विशाख जी ने कहा- आरटीओ में दलालों के सक्रिय होने और अवैध वसूली की शिकायत मिली थी। इसलिए मौके पर पहुंचकर छापेमारी की गई है। भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा। प्रशासन ऑनलाइन प्रक्रिया को सख्ती से लागू कराएगा। ताकि आवेदकों को दलालों की जरूरत न पड़े। निरीक्षण के दौरान कई बिना लाइसेंस वाले जनसेवा केंद्र संचालित होते पाए गए। जिलाधिकारी ने कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स को सीज करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने आरटीओ कार्यालय और आसपास की दुकानों का निरीक्षण किया। इस दौरान आरटीओ कार्यालय में लगे सीसीटीवी की जांच कर एक सप्ताह में आने-जाने वाले संदिग्धों को चिह्नित कर पूछताछ करने और कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए।

गोकुल व नंदबाबा पुरस्कार से नवाजे गए दुग्ध उत्पादक

मंत्री बोलें, हम नहीं खर्च कर पा रहे अपने विभाग का बजट

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश प्रादेशिक कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड (पीसीडीएफ) के द्वारा शुक्रवार को राजधानी लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में गोकुल पुरस्कार और नंदबाबा पुरस्कार दिया गया। जिसमें पशुधन और दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने वर्ष 2023-24 में चुने गए किसानों में से 63 को गोकुल पुरस्कार और 44 नंदबाबा पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया गया।

वही पीसीडीएफ के डॉ. मनोज तिवारी ने बताया कि गोकुल पुरस्कार हर वित्तीय वर्ष में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने वाले किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है। इसका उद्देश्य किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले दूध उत्पादन के लिए प्रेरित करना है। नंदबाबा पुरस्कार उन किसानों को

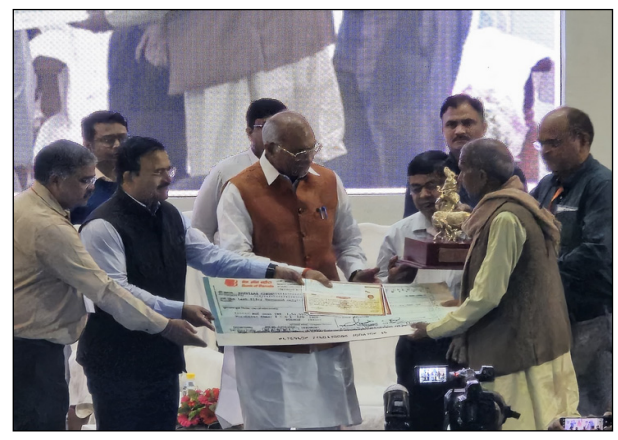

दिया जाता है जिन्होंने डेयरी उद्योग में अपना योगदान दिया है। यह पुरस्कार डेयरी किसानों को आधुनिक तकनीको को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह राज्य में डेयरी उद्योग के विकास को बढ़ावा देने और किसानों की आय बढ़ाने में भी मदद करता है। वही इस पुरस्कार सम्मान समारोह में आए जौनपुर के किसान ओम प्रकाश ने कहा कि सरकार के द्वारा ले गए योजनाओं का अब लाभ मिलने लगा है। नेशनल डेरी बोर्ड के द्वारा जो काम किया जा रहा है उसे अब किसानों की दिक्कत है काम हो गई है अब सीधे खातों में पैसे आते हैं। इससे पहले समितियां के माध्यम से आता था लेकिन चीज पूरी तरह से बदल गई है। पशुधन और दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने बताया कि पशु सेवा हमारा धर्म है और गए राष्ट्र की माता है। दुग्ध समितियां हमारा स्वभाव है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गौ भक्त है हम जैसा प्रस्ताव उनके सामने लेकर जाते हैं उसको स्वीकार करते हैं। निराश्रित गौ वंश जो उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी समस्या है। उसके दूध देने के बाद पशुपालक जो अपनी गायों को छोड़ देता है। ऐसी गायों के रखरखाव पर 1 दिन में साढ़े 7 करोड रुपए खर्च होते हैं। हम लोगों को पशु सुधार पर जरूर चिंता करना चाहिए। पशुधन मंत्री ने भरे मंच से कहा कि कल हमने अपने अधिकारियों के साथ बैठक की और हमने उन्हें डाटा और कहा कि हमारे विभाग के पास इतना बजट है लेकिन हम खर्च नहीं कर पा रहे है। हमारे विभाग के पास बजट की कमी नहीं है। वही मंत्री ने कहा कि अब हम सड़कों के किनारे वाले छोटा पशुओं के गले में रेडियो बेल्ट पहनाएंगे। जिससे कि हम 15 मार्च से शुरू करेंगे जिससे जनहानि और पशुओं की हानि से बचा जा सकता है। 2000 करोड रुपए गोवंश के संरक्षण पर दिया गया है। जिसको तहत अब 7713 गौ आश्रय स्थल जो गौ संरक्षण के लिए बनाए गए है वह अब बाउंड्री वाल के साथ बनायेंगे। उत्तर प्रदेश सरकार ने दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने और किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए गोकुल और नंदबाबा पुरस्कारों का वितरण किया। यह समारोह लखनऊ में आयोजित किया गया, जिसमें प्रदेश भर के उत्कृष्ट दुग्ध उत्पादकों को सम्मानित किया गया।

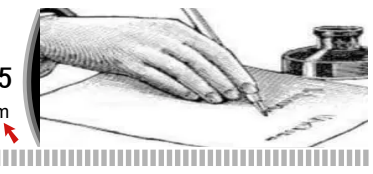

सम्पादकीय

अर्थव्यवस्था की चाह बनाम चुनावी दबाव

जिस समय शेयर बाजार गोते लगा रहा हो और निवेशकों के लाखों करोड़ देखते-देखते स्वाहा हो रहे हों, जब डालर के खिलाफरुपए की गिरावट रोकने के लिए सरकार मुश्किल से काम आए लाखों-करोड़ों डालर बाजार में उतारे और वे भी गिरावट को न रोककर खुद स्वाहा हो जाएं और जब सोना देखते-देखते नब्बे हजार प्रति दस ग्राम को छूता नजर आए तब यह कहना बहुत जोखिम और दिलेरी का काम है कि हमारी अर्थव्यवस्था काफी समय बाद मजबूती के लक्षण दिखा रही है और उसके बुनियादी पैमाने ऊपर की दिशा का ही रुख बनाए हुए हैं। और जब मोदी राज में आर्थिक प्रबंधन के हिसाब से केन्द्रीय भूमिका वाले शक्तिकान्त दास को रिजर्व बैंक के गवर्नर पद से सेवानिवृत्त होने के बाद प्रधानमंत्री का दूसरा प्रधान सचिव बनाने जैसा अपूर्व काम हुआ हो तब यह कहना भी मुश्किल है कि सरकार को आर्थिक मोर्चे की भारी हलचलों की परवाह नहीं है। शक्तिकान्त दास कोई बहुत भारी अर्थशास्त्री न हों और न ही उन्होंने सरकार में वित्त सचिव या रिजर्व बैंक का गवर्नर रहते कोई बहुत क्रांतिकारी कदम उठाया हो लेकिन इतना तो उनके पक्ष में जाता है कि मोदी सरकार के बुनियादी स्वभाव से उनका मेल है और उन्होंने अपनी प्रशासनिक जिम्मेवारियां उसी हिसाब से निभाई हैं। मोदीजी के नोटबंदी जैसे मुश्किल और गलत फैसले के बीच अर्थव्यवस्था और मुद्रा व्यवस्था को संभालना कोई आसान काम न था। जिस हिसाब से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने ऊटपटांग आर्थिक फैसलों से दुनिया भर में हड़कंप मचाए हुए हैं उसके बीच अपनी अर्थव्यवस्था की मजबूती के कोंपलों को संभालना और इसे एक स्वाभाविक विकास की तरफले जाना कोविड की तालाबंदी और नोटबंदी को संभालने से भी ज्यादा मुश्किल है। जब वैश्विक उथल-पुथल हो और बड़े जतन से बने विश्व व्यापार संगठन वाली व्यवस्थाओं को भी बेमानी बनाने का अभियान अमेरिकी राष्ट्रपति चलाएं तब निवेशकों और पूंजी का डर जाना बहुत स्वाभाविक है। बाइडन राज में अमेरिकी बांड और बैंकों की रकम पर कमाई का भरोसा बढ़ने से भी भारत समेत दुनिया भर के बाजारों से पूंजी अमेरिका गई थी। फिर चीन ने अपने निवेश नियम आसान किए और करों की छूट शुरू की तो उसने भी बड़े पैमाने पर पूंजी आकर्षित की। अब ट्रम्प द्वारा आयात पर कर बढ़ाने और कई देशों को सीधे धमकाने से बाजार में बेचैनी है। जाहिर तौर पर ऐसे वक्त निवेशक के लिए शेयर बाजार की अनिश्चितता से हटकर डालर, अमेरिकी सरकारी बांड और सोने में पैसा लगाना ज्यादा भरोसे का सौदा है। इसलिए बाजार में गिरावट के साथ डालर की महंगाई और सोने की बेतहाशा मांग बढ़ी है। वैश्वीकरण के युग में हम, खासकर बाजार इससे अछूते नहीं रह सकते। जनवरी का विदेश व्यापार का आंकड़ा भी बताता है कि सिर्फचालू घाटे के मामले में ही नहीं आइटम के हिसाब से भी हमारा विदेश व्यापार बेहतर हुआ है। वैश्विक स्तर पर सोने की मांग बढ़ने के के बावजूद सोना-प्रेमी भारत में आयात नहीं बढ़ा है।

पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में वैश्विक तेजी के बावजूद हमारे आयात बिल में ज्यादा वृद्धि नहीं हुई है और तेल उत्पादों तथा गहनों के अलावा बाकी चीजों के निर्यात में तेजी दिखी है। महंगाई का सामान्य ग्राफ काफी समय से नियंत्रण में रहने के बाद सरकार और रिजर्व बैंक को यह भरोसा हुआ है कि लंबे समय बाद पहली बार बैंक दरों में पचीस प्वाइंट की कमी की गई। इससे लोन आसान होगा और आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी। इस तेजी का इंतजार बाकी सभी क्षेत्रों में है और सरकार अलोकप्रियता या स्थिति हाथ से निकलने के डर से कई चीजों को रोके हुए है और अब अर्थव्यवस्था में मांग कम होने, ऋण मांगने वालों में कमी आने जैसे लक्षण भी दिखने लगे थे। इधर बेरोजगारी के मामले में भी बेहतर आंकड़े देखने में आए हैं। जिस एक चीज से आर्थिक जानकार सबसे ज्यादा आश्वस्त हुए हैं वह है खेती के नतीजे। खरीफकी फसल अच्छी होने के बाद अब रबी के भी रिकार्ड पैदावार की उम्मीद की जा रही है। इन्हीं सबका नतीजा है कि इस वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में विकास दर आधे फीसदी से ज्यादा ऊपर दिखाई देने लगा है जबकि दूसरी तिमाही में यह बहुत कम था। इस संकेत से यह उम्मीद मजबूत हुई है कि दुनिया में चाहे जो उठापटक चले भारत के आर्थिक विकास पर ज्यादा असर नहीं होगा। बुरा हो या अच्छा, पर अभी तक जीडीपी में विदेश व्यापार का हिस्सा ज्यादा बड़ा न होने से भी हम सुरक्षित हैं और यह बात बाहर की दुनिया को कुछ देर से मालूम हुई हो लेकिन सरकारी तंत्र को सिंगनल पहले से मिल रहे होंगे। यह बात हमारा बजट भी बताता है। हमारा राजकोषीय घाटा पहली बार साढ़े चार फीसदी के नीचे आया और हर बार टैक्स कलेक्शन का रिकार्ड बनना बताता है कि अर्थव्यवस्था का नान-फार्मल से फार्मल होने का अभियान चलाने के साथ ही वांछित दिशा में भी प्रगति हो रही है। यह वांछित दिशा क्या हो इस पर बहस हो सकती है लेकिन सरकार अपने अभियान में, जो काफी हद तक भूमंडलीकरण के अभियान से संचालित था या वोट पाने की हल्की राजनीति से, सफल रही है। आज नए सिरे से रेवड़ी बनाम अच्छा आर्थिक प्रशासन का मुद्दा उठाने लगा है पर बहस सही दिशा में नहीं चली है। संयोग से बजट ही इस विरोधाभास को सबसे अच्छी तरह बता भी देता है। इस बार के बजट का सबसे चर्चित फैसला आयकर की सीमा को बारह लाख करना था।

महिला ही क्यों हो रसोई की रानी, पुरुष महाराज क्यों नहीं

क्यों किसी भी काम को लिंग के आधार पर बांट दिया जाना चाहिए? जब भूख सबको बराबर लगती है तो फिर रसोई सिर्फएक की जिम्मेदारी क्यों हो? यहां तक कि बड़े हो गए बच्चे, घर आये मेहमान सभी का योगदान इसमें क्यों नहीं होना चाहिए? सबकी पसंद की चीजें बनाने और वक्त का ध्यान रखने वाली सुघढ़ गृहिणी का खिताब उसे अपने सपनों की कीमत पर ही क्यों मिलता है? आज की पढ़ी-लिखी लड़की इस माहौल में घुटने लगती है। इसी मुद्दे पर बनी फिल्म शिमसेजश् में दिखाया गया है कि ससुरजी को चटनी तो सिलबट्टे की ही चाहिए। मिक्सी में पोषक तत्व कट जाते हैं जबकि कूटने पर बने रहते हैं। बिरयानी तो दम की बेहतर होती है- घंटों धीमी आंच पर पकी हुई। फुल्का तो गर्म ही परोसा जाए जो दौड़ते हुए टेबल तक आए।

वर्षा भम्भाणी मिर्जा

पुरुष यूं तो रसोई में सदियों से है और क्या खूब है, लेकिन जब बात परिवार की रसोई में काम करने की आती है तो वे सिरे से गायब हो जाते हैं। परिवार नामक इकाई में खाना बनाना केवल स्त्री का दायित्व है। पुरुष कभी-कभार किचन में आते भी हैं तो वह किसी उत्सव से कम नहीं होता। प्याज, टमाटर, मसाले तैयार कर दो तो साहब मसालेदार डिश बना देंगे। फिर घर में सिर्फवाह-वाही होगी।

बातें होंगी कि साहब यूं तो बाहर जाकर रोजी करते हैं, लेकिन आज तो रोटी भी बनाई है। महिलाओं के जिम्मे खाना बनाने का यह काम हमेशा बिना भुगतान के ही रहा है। हिसाब लगाया जाए कि जो काम महिलाएं घर में करती हैं, उसे चुकाया जाए तो उनके बैंक खाते हमेशा एक मोटी रकम से भरे रहें। होता तो यह है दिन-रात के श्रम के बावजूद जीवन की सांध्य बेला में महिलाओं के पास अपनी कोई बचत की रकम भी नहीं होती। जो काम करती हैं उनके लिए भी काम और परिवार के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं होता। श्वर्क लाइफबैलेंसश् सहयोग की मांग करता है। जो इस संतुलन को साध लेती हैं, वे आगे बढ़ जाती हैं और शेष काम को त्याग परिवार चुन लेती हैं। महिला प्रगति के लिहाज से इस जगह आकर तनिक राहत मिल जाए तो आधी आबादी का काम काफी आसान हो जाएगा, वरना तो घर संभालने की कघ्वायद सबसे पहले उसका जॉब ही खाती है। हर रोज रसोई में उत्सव जैसे खाना बनाते रहने की चक्की में महिला किस कदर पिसती जाती है, इस मुद्दे को सलीके से दर्शाने वाली एक फिल्म की इन दिनों खूब चर्चा है। इस दौर में भी आखिर क्यों मछली जल की रानी है की तर्ज पर एक महिला को किचन की रानी बना दिया गया है, पुरुष क्यों नहीं रसोई का महाराज हो सकता? समाज भी ऐसी ही महिलाओं का आदर करता है जो भोजन के षडरस को परोसते हुए जिन्दगी बसर करती है।

क्यों किसी भी काम को लिंग के आधार पर बांट दिया जाना चाहिए? जब भूख सबको बराबर लगती है तो फिर रसोई सिर्फएक की जिम्मेदारी क्यों हो? यहां तक कि बड़े हो गए बच्चे, घर आये मेहमान सभी का योगदान इसमें क्यों नहीं होना चाहिए? सबकी पसंद की चीजें बनाने और वक्त का ध्यान रखने वाली सुघढ़ गृहिणी का खिताब उसे अपने सपनों की कीमत पर ही क्यों मिलता है? आज की पढ़ी-लिखी लड़की इस माहौल में घुटने लगती है। इसी मुद्दे पर बनी फिल्म शिमसेजश् में दिखाया गया है कि ससुरजी को चटनी तो सिलबट्टे की ही चाहिए। मिक्सी में पोषक तत्व कट जाते हैं जबकि कूटने पर बने रहते हैं। बिरयानी तो दम की बेहतर होती है- घंटों धीमी आंच पर पकी हुई। फुल्का तो गर्म ही परोसा जाए जो दौड़ते हुए टेबल तक आए। और हां, घर का कोना-कोना साफऔर चमकदार होना चाहिए। ससुरजी को धूल से एलर्जी है। चप्पल भी बिस्तर के नीचे रखी हुई मिलनी चाहिए। लगता है जैसे किसी बीमार की सेवा हो रही है। साथ खाने का तो कोई रिवाज ही नहीं। ससुरजी की ऐसी ही आदतें सासु मां ने सहेजी हैं और अब उनके बेटे को भी पत्नी से ऐसी ही उम्मीद है। पत्नी को डांस में दिलचस्पी है पर ये भले घर के लोग, उसके पुराने वीडियो भी सोशल मीडिया से डिलीट करवाना चाहते हैं। करवा चौथ के दिन घर के पुरुष सदस्य छककर खाना खाते हुए कह रहे हैं कि कुछ भी कहो, हमारी प्राचीन परंपराएं हैं बड़ी वैज्ञानिक। ऐसे तमाम दृश्य आरती कडव निर्देशित और अनु सिंह चौधरी के संवाद और पटकथा लेखन वाली फिल्म शिमसेजश् रचती है जो इन दिनों हर भारतीय को छू रही हैं।

ऐसा इसलिए क्योंकि भारत के मध्यम वर्ग की आधी आबादी अब भी शेष आधी आबादी को खाना पकाकर देने में ही जुटी हुई है। मिसेज श्द ग्रेट इंडियन किचनश् का रीमेक है। भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या लगातार घट रही है। यहां तक कि नेपाल, भूटान और श्रीलंका भी हमसे आगे हैं। महिलाओं के कामकाजी होने के रिकॉर्ड में दुनिया का औसत भी कुछ खास अच्छा नहीं है। केवल 40 फीसदी जबकि बहामा में यह सर्वाधिक 90 प्रतिशत है। जी-20 देशों के समूह में भी कामकाजी भारतीय महिलाओं की हिस्सेदारी सबसे कम है। हमारे कुल कार्यबल में भागीदारी 24 प्रतिशत के आसपास है, जो कुवैत (27.8) और सऊदी अरब (35) से भी कम है। 2005 में भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या 27 फीसदी थी जो 2021 में घटकर 23.54 फीसदी रह गई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के 2020 में जारी एक सर्वे में पाया गया है कि 81.2 प्रतिशत महिलाएं अवैतनिक घरेलू सेवाओं में लगी हुई हैं जबकि पुरुषों के लिए यह संख्या 26 प्रतिशत है। इसका आशय है कि वे घरेलू कामकाज, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल में लगभग दस गुना ज्यादा समय दे रही हैं। अगर भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है तो महिलाओं को इसमें शामिल किया ही जाना चाहिए। 2020 में नोबेल पुरस्कार विजेता क्लाउडिया गोल्डीन कहती हैं-सभी महिलाएं काम करती हैं लेकिन सभी को वेतन नहीं मिलता।श् देखा जाए तो महिलाएं पुरुषों की तुलना में सप्ताह में ज्यादा काम करती हैं लेकिन वे कम अवकाश वाली थकी हुई महिलाएं हैं। फिल्म रूह्व. के अंत की खूब आलोचना हो रही है क्योंकि नायिका पति से अलग हो जाती है और डांस को अपना लेती है। उसके पति को दूसरी बीवी मिल जाती है जो वही सब कर रही होती है जो नायिका की अर्थशास्त्र में पीएचडी कर चुकी सास कर रही थी। आलोचकों को एतराज है कि दूसरी बीवी को फिर से गर्म फुल्के बनाते हुए दिखाने की जरूरत नहीं थी, इससे पितृसत्ता का किला वहीं खड़ा दीखता है। यह ध्वस्त नहीं होता। उन्हें लगता है कि फिल्म वहीं खत्म हो जानी चाहिए थी जहां नायिका घर छोड़ती है। दरअसल जो फिल्म में दिखाया गया है वही सच है। अलग हुए पतियों को ही नहीं, दहेज के दोषियों तक को यहां दुबारा मिसेज मिल जाती हैं। जब तक यह सिलसिला नहीं टूटेगा, पितृसत्ता के मजबूत किले कभी ध्वस्त नहीं होंगे। किसी को लगता है कि नायिका को रण भी नहीं छोड़ना चाहिए था। तब क्या इसी घुटन में दम तोड़ देना चाहिए था? सौ साल पहले रवींद्रनाथ टैगोर ने भी मृणाल नामक किरदार की रचना की थी जिसने समाज में स्त्री के हालात और भेदभाव से दुखी होकर वैवाहिक जीवन और परिवार का त्यागकर जगन्नाथ की राह पकड़ ली थी। मार्ग मीरा का भी वही था। श्मृणाल की चिठ्ठीश् शीर्षक से इस कहानी में मृणाल कहती है- मैं सिर्फआपके घर की छोटी बहू नहीं हूं। मैं मैं हूं..। कहा जा सकता है कि मिसेज बन जाना पहचान का खोना नहीं होना चाहिए। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस महिला दिवस पर महिलाएं अपने दिल की सुनने के और करीब होंगी और शेष समाज उनके साथ। अनामिका की कविता फर्नीचर भी बहुत कुछ कहती है- मैं उनको रोज झाड़ती हूं पर वे ही हैं इस पूरे घर में जो मुझको कभी नहीं झाड़ते! रात को जब सब सो जाते हैं।

जेबों की सर्जरी

यह खबर परेशान करती है कि देश के करोड़ों मरीज पहुंच से बाहर के महंगे इलाज के कारण गरीबी की दलदल में फंस जाते हैं। वे कथित रूप से दूसरे भगवान कहे जाने वाले शख्स के आगे बेबस नजर आते हैं। खासकर बड़े आप्रेशनों व उपकरणों से लेकर महंगी दवाओं को लेकर। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने मरीजों की दुखती रग को समझते हुए केंद्र व राज्य सरकारों से निजी अस्पतालों में मरीजों का शोषण रोकने के लिये नीतिगत फैसला लेने को कहा है। एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि देशवासियों को चिकित्सा का बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराना राज्यों का कर्तव्य है। निर्विवाद रूप से राज्य सरकारें ऐसा करने में विफल रही हैं। इसके बावजूद कि उन्होंने बड़े अस्पतालों को जमीन आदि तमाम सुविधाएं रियायती दरों पर दी हैं। ऐसे में वे गरीब मरीजों को राहतकारी इलाज देने के लिये बड़े अस्पतालों को बाध्य कर सकती थीं। वैसे चुनावों के दौरान तमाम तरह के सब्जबाग दिखाने वाले राजनीतिक दलों के एजेंडे में चिकित्सा सुविधा सुधार कभी प्राथमिकता नहीं रही। यदि सार्वजनिक चिकित्सा का बेहतर ढांचा उपलब्ध होता तो लोग निजी अस्पतालों में जाने को मजबूर न होते। यदि निगरानी तंत्र मजबूत होता और प्रभावी कानून होते तो मरीजों को दोहन का शिकार न होना पड़ता। यदि मरीजों से निजी अस्पतालों में मनमानी रकम वसूली जाती है तो यह राज्य सरकारों की छवि पर आंच है कि वे मरीजों को किफायती उपचार उपलब्ध कराने में विफल रही हैं। यही वजह है कि शीर्ष अदालत को कहना पड़ा कि मरीजों को उचित मूल्य वाली दवाइयां न मिल पाना राज्य सरकारों की नाकामी को ही दर्शाता है। इतना ही नहीं राज्य सरकारें निजी अस्पतालों को न केवल सुविधाएं प्रदान करती हैं बल्कि उन्हें प्रोत्साहन भी देती हैं। सरकारों का यह दावा अतार्किक है कि मरीजों के तिमारदारों के लिये निजी अस्पताल के मेडिकल स्टोरों से दवा खरीदने की बाध्यता नहीं है। दरअसल, अस्पताल की फार्मेसी या खास मेडिकल स्टोरों से दवाइयां खरीदना तिमारदारों की मजबूरी बन जाती है। उन्हें खास ब्रांड की दवा व उपकरण खरीदने के निर्देश होते हैं। दरअसल, खुले बाजार में उनकी उपलब्धता और गुणवत्ता को लेकर आशंका होती है। असल में, यह नीति-नियंताओं की जवाबदेही है कि वे मरीजों और उनके परिवारों को शोषण से बचाने के लिये दिशा-निर्देश तैयार करें। हालांकि, यह इतना भी आसान नहीं है क्योंकि विभिन्न हितधारकों के दबाव अकसर सामने आते हैं। जैसा कि वर्ष 2023 में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग को उस समय कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था जब उसने डॉक्टरों से कहा था कि वे ब्रांडेड दवाएं न लिखें। उसके स्थान पर जेनेरिक दवाएं लिखें, ऐसा न करने पर उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। चिकित्सा बिरादरी ने तब दबाव बनाते हुए कहा था कि दवाओं की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। जिसके बाद यह आदेश जल्दी ही वापस लेना पड़ा था। इसके अलावा ब्रांडेड दवाओं के निर्माताओं ने भी दबाव बनाया था, जो कि जन-कल्याण के बजाय बड़े पैमाने पर मुनाफे को प्राथमिकता देते रहते हैं। वैसे निजी अस्पतालों द्वारा दवाओं के जरिये पैसा कमाने की वजह यह भी है कि सरकारी जन-औषधि केंद्रों का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहा है। ये केंद्र, जिनकी देश में संख्या पंद्रह हजार के करीब है, देश के सभी जिलों को कवर करते हैं। ये केंद्र नागरिकों को सस्ती कीमत पर गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने के लिये बनाये गए थे। लेकिन, ये केंद्र दवाओं की कमी,गुणवत्ता के नियंत्रण के अभाव और ब्रांडेड दवाओं की अनधिकृत बिक्री की समस्याओं से ग्रसित रहे हैं। निश्चित रूप से औषधि विनियामक प्रणाली में सुधार करने से तमाम असहाय रोगियों की परेशानियों को कम करने में मदद मिल सकती है। एक रिपोर्ट बताती है कि सरकारी अस्पतालों की तुलना में निजी अस्पतालों का खर्च सात गुना होता है। खासकर कोरोना काल के बाद चिकित्सा खर्च में खासी बढ़ोतरी हुई है। निस्संदेह, राज्य सरकारों को इस मुद्दे पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार कर उचित गाइडलाइंस बनानी चाहिए। निजी अस्पतालों व मरीजों के हितों के मद्देनजर राज्य सरकारों के संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

असह्य हो चला है भारत का अपमान

बहुत छोटे-छोटे देश भी अपनी सम्प्रभुता व प्रतिष्ठा को बचाने के लिये कृतसंकल्पित हैं लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को न तो खुद के सम्मान की चिंता है और न ही देश की प्रतिष्ठा की। इससे उत्साहित ट्रम्प हर रोज भारत का अपमान कर रहे हैं। अमेरिकी इरादों से निपटने की यहां कोई तैयारी नहीं दिखती। शुरुआत करें तो ट्रम्प के शपथ ग्रहण समारोह से। अमेरिकी राष्ट्रपति के वर्ष 2020 के चुनाव में पद की गरिमा और अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकोल को ताक पर रखकर मोदी ने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान उनके पक्ष में यह कहकर प्रचार किया था कि श्अब की बार ट्रम्प सरकारश्। उसी ट्रम्प ने 2024 का चुनाव जीतने के बाद जब पद सम्हाला तो मोदी को आमंत्रित तक नहीं किया। भारत के दुश्मन देश चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग बुलाये गये, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर गये।

दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनकर आये डोनाल्ड ट्रम्प के फैसले भारत के लिये हानिकारक तो हैं ही, अपमानजनक भी हैं। यह ऐसे वक्त में हो रहा है जब ट्रम्प ने दुनिया भर के खिलाफट्रेड वार की शुरुआत कर दी है। कारोबारी पृष्ठभूमि से आये ट्रम्प की दिलचस्पी व्यवसायों के बूते दुनिया पर राज करने में है। वे जानते हैं अब विश्व विजेता सैन्य शक्ति के बल पर सम्भव नहीं, न परम्परागत साम्राज्यवादी तरीके से दुनिया मुट्ठी में की जा सकती है। उनके इन खतरनाक विचारों को दुनिया समझ चुकी है। कुछ देश नयी परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये खुद को तैयार कर रहे हैं। चीन जैसा देश तो न केवल व्यवसाय के स्तर पर बल्कि जरूरत पड़ी तो उससे युद्ध के मैदान में भी दो-दो हाथ करने की तैयारी कर रहा है।

बहुत छोटे-छोटे देश भी अपनी सम्प्रभुता व प्रतिष्ठा को बचाने के लिये कृतसंकल्पित हैं लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को न तो खुद के सम्मान की चिंता है और न ही देश की प्रतिष्ठा की। इससे उत्साहित ट्रम्प हर रोज भारत का अपमान कर रहे हैं। अमेरिकी इरादों से निपटने की यहां कोई तैयारी नहीं दिखती। शुरुआत करें तो ट्रम्प के शपथ ग्रहण समारोह से। अमेरिकी राष्ट्रपति के वर्ष 2020 के चुनाव में पद की गरिमा और अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकोल को ताक पर रखकर मोदी ने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान उनके पक्ष में यह कहकर प्रचार किया था कि श्अब की बार ट्रम्प सरकारश्। उसी ट्रम्प ने 2024 का चुनाव जीतने के बाद जब पद सम्हाला तो मोदी को आमंत्रित तक नहीं किया। भारत के दुश्मन देश चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग बुलाये गये, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर गये और यहां तक कि देने के लिये उद्देश्यहीन यात्रा की। ट्रम्प ने द्वीपक्षीय अनुबन्ध के नाम पर अमेरिका से पुराने व पॉयलेटों के लिये खतरनाक हो चुके एफ-35 लड़ाकू विमान तथा महंगी दरों पर प्राकृतिक गैस व तेल खरीदी के लिये उनके दस्तखत ले लिये। इतना ही नहीं, उनके पहुंचने के पहले से लेकर

भारत के सर्वाधिक अमीरों में से एक मुकेश अंबानी सपत्नीक आमंत्रित थे। जयशंकर कई दिनों तक मोदी के लिये आमंत्रण पाने की आस व जुगाड़ में वाशिंगटन डीसी में बैठे रहे फिर भी उन्हें नहीं बुलाया गया। तो भी मोदी ने उन्हें बधाइयां ट्रम्प भारत की आयात-निर्यात नीति की लगातार आलोचना यह कहकर कर रहे थे कि भारत दुनिया के उन देशों में से एक है जिसका शुल्क सबसे ज्यादा है जिसके चलते भारत के साथ व्यापार मुश्किल है। उन्होंने मोदी की उपस्थिति में साफकर दिया कि वे रेसिप्रोकल नीति अपनाएंगे। यानी भारत अमेरिकी वस्तुओं पर जितना शुल्क लगायेगा, उतना ही अमेरिका भी भारतीय वस्तुओं पर लगायेगा। इसके विपरीत अब ट्रम्प ने ऐलान कर दिया है कि वे विदेशी वस्तुओं पर 100 फीसदी शुल्क लगाएंगे, जिनमें भारत भी शामिल है। ट्रम्प की इस दादागिरी का जवाब देते हुए चीन ने भी बराबरी का शुल्क लगाने की घोषणा कर दी है जबकि भारत इसका जवाब कैसे देगा, यह अब तक स्पष्ट नहीं। व्यवसायिक हलकों में कहा जा रहा है कि इससे भारत के आयात-निर्यात को बड़ा झटका लग सकता है। अपमान की अगली श्रृंखला में ट्रम्प ने कई देशों के अवैध प्रवासियों को वापस भेजने का बीड़ा उठाया। वे उनके बारे में खराब शब्दों का प्रयोग तक करते रहे हैं। कई देशों के लोगों को उन्होंने वापस भेजा लेकिन कोलंबिया, मैक्सिको आदि देशों ने अपने नागरिकों की सम्मानजनक वापसी कराई जबकि भारतीयों को हथकड़ी-जंजीरों में बांधकर भेजा गया। ट्रम्प को इसमें इसलिये कठिनाई नहीं आई क्योंकि स्वयं भारत सरकार ने उसके इस कार्य को जायज ठहराया। ट्रम्प व उनके खास दुनिया के सबसे बड़े कारोबारी एलन मस्क हर रोज दुनिया भर से अमेरिका आये अवैध प्रवासियों को गालियां देते हैं लेकिन सिर्फभारतीयों को बेड़ियों में भेजते हैं क्योंकि बाकी देश और उनका नेतृत्व अपने नागरिकों के साथ खड़ा रहता है। वैसे ट्रम्प के शपथ ग्रहण समारोह में खालिस्तानी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू को बुलाया गया जिसने अपने साथियों के साथ जयशंकर की उपस्थिति में खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाये व उसका झंडा फहराया। उनकी बढ़ती हिम्मत का ही परिणाम है कि गुरुवार की सुबह (भारतीय समयानुसार) अपनी ब्रिटेन यात्रा के दौरान जब जयशंकर लंदन के चौथम हाउस से निकले तो इन्हीं खालिस्तानियों ने उनके सामने तिरंगा फाड़ा तथा खालिस्तानी नारे लगाये। इस बात को यदि भारत की ओर से पहले ही अमेरिकी प्रशासन के सामने उठाया जाता तो अलगाववादियों के हौसले दुनिया के किसी भी हिस्से में इतने बुलन्द न हुए होते। यह सारा कुछ उस समय हो रहा है जब मोदी खुद के गले में विश्वगुरु का तमगा लटकाये घूमते हैं और हर विदेशी राष्ट्राध्यक्ष से जबरन गले लिपटकर अपने भक्तों के आगे दुनिया के सबसे ताकतवर नेता की छवि गढ़ते रहते हैं। वैसे अब ट्रम्प भी मोदी की महत्वाकांक्षा, फितरत तथा खोखलेपन को जान चुके हैं और शायद उन्हें यह संदेश देना चाहते हैं कि दुनिया में रहेगा तो एक ही विश्वगुरु- अमेरिका! मोदी बेशक अपना जितना चाहे अपमान करायें लेकिन भारत कभी इतना कमजोर नहीं रहा है। आजादी के तुरन्त बाद जब भारत की राजदूत से कहा गया।

जीत के साथ अभियान खत्म करने आरसीबी के खिलाफ उतरेंगे यूपी वारियर्स

एजेंसी

लखनऊ। टूर्नामेंट से बाहर होने की कगार पर खड़ी यूपी वारियर्स शनिवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के खिलाफ मैच में जीत के साथ महिला प्रीमियर लीग के इस सत्र से विदा लेना चाहेगी और इसके लिये मध्यक्रम के उसके बल्लेबाजों को बेहतर प्रदर्शन करना होगा। यूपी की टीम ने कई मौके गंवाये और एक ईकाई के रूप में अच्छा प्रदर्शन करने में नाकाम रही । सात मैचों में महज चार अंक के साथ वह तालिका में सबसे नीचे है और तकनीकी दौर पर ही दौड़ में बनी हुई है।

गत चैम्पियन आरसीबी के लिये भी यह सत्र कठिन रहा और उसके छह मैचों में चार ही अंक है। वह लगातार चार मैचों में पराजय झेल चुकी है। वैसे उनके पास अभी एक मैच और है जिससे प्लेआफ की उम्मीदें बनी हुई है। स्मृति मंधाना की टीम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के इरादे से उतरेगी । पिछले मैच में सुपर ओवर में मिली हार की यादें अभी भी ताजा है और उनका लक्ष्य बदला चुकता करने का भी होगा। यूपी की टीम बार बार के बदलावों से उबर नहीं सकी और उसका बल्लेबाजी क्रम स्थिर नहीं हो पाया है । पिछले तीन मैचों में शीर्षक्रम में काफी बदलाव किये गए । उन्होंने कम से कम एक विदेशी बल्लेबाज से पारी का आगाज कराया लेकिन कामयाबी नहीं मिली । भारत की किरण नवगिरे शीर्ष तीन में हमेशा रही लेकिन मिली जुली सफलता मिली । ग्रेस हैरिस ने एक अहम पारी खेली और पिछले मैच में मुंबई इंडियंस के खिलाफ जॉर्जिया वोल चमकी । यूपी का मध्यक्रम हालांकि एक टीम के रूप में नाकाम रहा और ना तो बड़ा स्कोर बन सका और ना ही लक्ष्य का पीछा करने में कामयाब रहे । यूपी की कप्तान दीप्ति शर्मा ने कहा ,'' हम मध्यक्रम में लगातार गलतियां कर रहे हैं । हमारा शीर्ष और निचला क्रम अच्छा खेल रहा है लेकिन मध्यक्रम पर फोकस करना होगा । उम्मीद है कि आखिरी मैच में वे अच्छा प्रदर्शन करेंगे । यूपी वारियर्स ने इस सत्र में सर्वोच्च स्कोर 180 रन आरसीबी के खिलाफ ही बनाये थे । उन्होंने सुपर ओवर में वह मैच जीता था । दूसरी ओर आरसीबी ने लगातार दो जीत के साथ शुरूआत की थी लेकिन उसके बाद लय से भटक गई । बेंगलुरू में टीम एक भी मैच नहीं जीत सकी । कप्तान मंधाना को उम्मीद होगी कि जगह बदलने से किस्मत भी बदलेगी। तालिका में चौथे स्थान पर काबिज आरसीबी के बल्लेबाज पिछले दो मैचों में नाकाम रहे और मंधाना का अपना फॉर्म चिंता का विषय है । दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 81 रन बनाने के बावजूद वह स्पिनरों के खिलाफ जूझती नजर आई । एलिसे पैरी भी लगातार अच्छा नहीं खेल सकी इसी तरह आरसीबी के गेंदबाज भी लगातार अच्छा प्रदर्शन करने में नाकाम रहे । उन्होंने पिछले मैच में सात गेंदबाजों को आजमाया लेकिन सफलता नहीं मिली। तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ठाकुर ने टूर्नामेंट में अभी तक दस विकेट लिये हैं जबकि स्पिनर जॉर्जिया वेयरहैम ने नौ विकेट चटकाये हैं।

टीमें:-

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू: स्मृति मंधाना (कप्तान), कनिका आहूजा, एकता बिष्ट, चार्ली डीन, किम गार्थ, ऋचा घोष (विकेटकीपर), हीथर ग्राह्म, वीजे जोशीथा, सब्बिनेनी मेघना, नज़्हत परवीन, जगरावी पवार, एलिसे पेरी, राघवी बिस्ट, स्नेह राणा, प्रेमा रावत, रेणुका सिंह, जॉर्जिया वेरेह्म, डैनी व्याट-हॉज।
यूपी वारियर्स: दीप्ति शर्मा (कप्तान), अंजलि सरवानी, चमारी अथापथु, उमा छेत्री, सोफी एक्लेस्टोन, राजेश्वरी गायकवाड़, अरुशी गोयल, क्रांति गौड़, ग्रेस हैरिस, चिनेले हेनरी, पूनम खेमनार, अलाना किंग, ताहलिया मैकग्रा, किरण नवगिरे, श्वेता सहरावत, गौहर सुल्ताना, साइमा ठाकोर, दिनेश वृंदा। मैच शाम 7.30 से शुरू होगा।

इंग्लैंड के सफेद गेंद के नए कप्तान हो सकते हैं बेन स्टोक्स
जोस बटलर ने चैंपियंस ट्रॉफी के बीच में छोड़ी कप्तानी

एजेंसी

लंदन। जोस बटलर के इस्तीफे के बाद इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स सीमित ओवरों के प्रारूप में अगले कप्तान हो सकते हैं और ईसीबी के निदेशक रॉब की ने कहा कि खुद को 'अविश्वसनीय रणनीतिकार' साबित कर चुके इस करिश्माई हरफनमौला के नाम पर विचार नहीं करने वाला मूर्ख ही होगा । चैंपियंस ट्रॉफी में इंग्लैंड के एक भी जीत दर्ज नहीं कर पाले के बाद बटलर ने टूर्नामेंट के बीच में ही कप्तानी छोड़ दी थी। इससे पहले भारत में श्रृंखला में भी उसे पराजय मिली। 33 बरस के स्टोक्स हैमस्ट्रिंग चोट के कारण चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर थे। उन्होंने 2023 विश्व कप के बाद से वनडे क्रिकेट नहीं खेली है जब उन्होंने इस प्रारूप से विदा लेने का अपना फैसला वापिस ले लिया था। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड में पुरूष क्रिकेट निदेशक की ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा, बेन स्टोक्स सर्वश्रेष्ठ कप्तानों में से है । उसके नाम पर विचार नहीं करने वाला मूर्ख होगा। उन्होंने कहा ,''वह अविश्वसनीय रूप से अच्छा रणनीतिकार है जो हमने टेस्ट क्रिकेट में देखा। वह खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करा पाता है । वह ऐसा इंसान है जो दबाव के हालात में खिलाड़ियों की ढाल बनकर उन्हें खुद पर भरोसा रखने में मदद करता है। स्टोक्स इस समय अबुधाबी में इंग्लैंड लायंस अभ्यास समूह के साथ हैं और भारत के खिलाफ जून से अगस्त तक होने वाली पांच टेस्ट की श्रृंखला तक फिट हो जायेंगे । इस समय यूएई में मौजूद की का मानना है कि स्टोक्स में वनडे टीम में जोश का संचार करने की क्षमता है जो उसने टेस्ट टीम के साथ किया । स्टोक्स का कोच ब्रेंडन मैकुलम के साथ भी अच्छा तालमेल है जिससे उनकी दावेदारी को बल मिलता है । वैसे मैकुलम के सीमित ओवरों का प्रभार भी संभालने के बाद से इंग्लैंड ने 11 में से 10 मैच गंवाये हैं ।

इंग्लैंड टेस्ट सीरीज के लिए मौका मिला तो तैयार हूंः पुजारा

एजेंसी

कोलकाता। दिग्गज भारतीय क्रिकेटर चेतेश्वर पुजारा ने कहा कि इंग्लैंड टेस्ट सीरीज के लिए भूख और भी बढ़ गई है, अगर मौका मिला तो मैं इसे लपकने के लिए पूरी तरह से तैयार हूं।

पुजारा ने गुरुवार को मीडिया कॉन्क्लेव में भारतीय टीम में वापसी के सवाल पर कहा, मैं घरेलू क्रिकेट खेल रहा हूं। अगर मौका मिला तो मैं इसे दोनों हाथों से लपकने के लिए तैयार हूं। मेरे सीरीज में खेलने की भूख और भी बढ़ गई है। जब आप बड़े हो जाते हैं, तो आपको और भी कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा, हमारे पास गेंदबाजी है। हमें बोर्ड पर रन बनाने की आवश्यकता है और हमारे पास ऐसा करने वाले खिलाड़ी हैं। हमें गेंदबाजी और वहां की परिस्थितियों का सम्मान करना होगा। भारतीय टेस्ट टीम के नंबर तीन स्थान के मजबूत स्तंभ रहे चेतेश्वर पुजारा फिलहाल भारतीय टीम से बाहर चल रहे हैं। वह टीम में वापसी का मौका मिलने और जोरदार वापसी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। भारत को इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैच की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इंडियन प्रीमियर लीग के बाद शुरु होने वाली यह टेस्ट सीरीज विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 का हिस्सा होगी। पुजारा सौराष्ट्र की रणजी ट्रॉफी टीम का हिस्सा हैं। इस सत्र उन्होंने छत्तीसगढ़ के खिलाफ 234 रन और असम के खिलाफ 99 रन की पारियां खेली। रणजी ट्रॉफी में उनका प्रदर्शन मिश्रित रहा है। उनके पास विदेश की पिचों का अनुभव और सफलता उन्हें टीम में वापसी का प्रबल दावेदार मानती है।

गोल्फ टूर्नामेंट हीरो इंडियन ओपन का शुभारंभ 27 मार्च से

नयी दिल्ली। भारत का बहुप्रतिष्ठित गोल्फ टूर्नामेंट हीरो इंडियन ओपन 2025 आगामी 27 से 30 मार्च तक गुरुग्राम के डीएलएफ गोल्फ एंड कंट्री क्लब में खेला जायेगा। गुरुवार को यहां आयोजित एक समारोह में भारतीय गोल्फ संघ (आईजीयू) द्वारा सह-स्वीकृत हीरो इंडियन ओपन टूर्नामेंट के शुभारंभ की घोषणा की गई।

टूर्नामेंट में जैक्स क्रुइसविज्क, जोहान्स वीरमैन, जूलियन ग्यूरियर, एंजेल हिडाल्गो, फ्रेडरिक लैक्रोइक्स, डेविड रेवेटो, इवेन फर्ग्यूसन और गुइडो मिग्लिओजी जैसे नामी हिस्सा लेंगे। इस टूर्नामेंट में जीत हासिल करने वाले भारतीय गोल्फरों को डीपी वर्ल्ड टूर पर अगले वर्ष के लिए पूर्ण कार्ड प्राप्त करने का अवसर मिलता है। समारोह में टूर्नामेंट के लिए 22.5 लाख अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि घोषणा की गई है। जापान के 24 वर्षीय गत विजेता कीता नाकाजिमा इस टूर्नामेंट में नेतृत्व करेंगे।

मैडी ग्रीन का शतक, न्यूजीलैंड की महिला टीम ने श्रीलंका को 78 रनों से हराया

एजेंसी

नेल्सन। मैडी ग्रीन (100) की शतकीय और हन्ना रोवे (चार विकेट) के शानदार प्रदर्शन के दम पर न्यूजीलैंड की महिला टीम ने शुक्रवार को दूसरे एक दिवसीय मुकाबले में श्रीलंका को 78 रनों से हरा दिया है।

246 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 31 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। कप्तान चमारी अट्टापटू (11) और विशमी गुणरत्ने (आठ) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद हर्षिता समरविक्रमा और कविशा दिलहारी की जोड़ी ने पारी संभालने का प्रयास किया। दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट के लिए 68 रनों की साझेदारी हुई। ईडन कार्सन ने कविशा दिलहारी (25) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद न्यूजीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण के आगे श्रीलंका का कोई भी बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सका। मनुडी नानायक्कारा (शून्य), हर्षिता समरविक्रमा ने 77 गेंदों में चार चौकों की मदद से (59) रनों की पारी खेली। नीलक्षिका सिल्वा (20), अनुष्का संजीवनी (13), अचिनी कुलसुरिया (एक), इनोशी प्रियदर्शनी (शून्य), चेतना विमुक्ति (तीन) रन बनाकर आउट हुई। न्यूजीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण के आगे श्रीलंका की पूरी टीम 46.4 ओवर में 167 रन पर ढ़ेर हो गई। न्यूजीलैंड की ओर से हन्ना रोवे ने चार विकेट लिये। ब्री इलिंग और ईडन कार्सन को दो-दो विकेट मिले। सूजी बेट्स ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां न्यूजीलैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 59 के स्कोर तक अपने चार विकेट गवां दिये। सूजी बेट्स (पांच), एम्मा मैकलियोड (छह), ब्रुक हैलीडे (छह) और जॉर्जिया प्लिमर (28) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी मैडी ग्रीन ने पारी को संभालने का प्रयास किया। इसाबेला गेज (19), जेस केर (38) रन बनाकर आउट हुई। मैडी ग्रीन ने 109 गेंदों में सात चौके लगाते हुए (100) रन बनाये। वह 50वें ओवर की तीसरी गेंद पर रनआउट हुई। न्यूजीलैंड ने निर्धारित 50 ओवरों में सात विकेट पर 245 रनों का स्कोर खड़ा किया।श्रीलंका की ओर से चमारी अट्टापटू ने दो विकेट लिये। अचिनी कुलसुरिया, इनोशी प्रियदर्शनी और कविशा दिलहारी ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

टेक महिंद्रा ने टेक्सास के प्लानों में खोला अपना नया मुख्यालय

एजेंसी

प्लानो (अमेरिका)। भारत की सूचना प्रौद्योगिकी एवं सेवा कंपनी टेक महिंद्रा ने अमेरिका के लिए अपना नया मुख्यालय स्थापित कर दुनिया के इस प्रमुख बाजार में परिचालन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

टेक्सास के प्लानों में अपने इस केंद्र के बारे में कंपनी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा, यह नया कार्यालय अमेरिकी बाजार के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। कंपनी ने कहा है कि यह केंद्र तकनीकी नवाचार को आगे बढ़ाने और अपने ग्राहकों को उन्नत समाधान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विज्ञप्ति के अनुसार प्लानों कार्यालय के उद्घाटन समारोह में वहां के मेयर जॉन बी. मुन्स, अमेरिकी सांसद मेलानी रॉयर, कंपनी के ग्राहक और टेक महिंद्रा के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

महिंद्रा समूह की कंपनी टेक महिंद्रा के अमेरिकी बाजार के प्रमुख लक्ष्मणन चिदंबरम ने कहा, प्रौद्योगिकी और नवाचार केंद्र के रूप में टेक्सास की वृद्धि बराबर बनी हुई है । यह स्थान हमें ऐसे क्षेत्रों में अपने नवाचार को बढ़ाने में सक्षम करेगा जो विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्लाउड कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में, जो उभरते उद्योग की जरूरतों को पूरा करने वाले अत्याधुनिक समाधान प्रदान करते हैं। कंपनी ने कहा कि वह इस केंद्र के माध्यम से परामर्श, वितरण और ग्राहक सहायता सेवाओं सहित परिचालन कार्यों की एक विविध श्रृंखला प्रस्तुत करेगी। कंपनी इसी परिसर में एक नवाचार लैब भी स्थापित करेगी। यह लैब उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में काम करेगा, जो अगली पीढ़ी की तकनीकों को विकसित करने, नवाचार को गति देने और उद्योगों में ग्राहकों की उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुसंधान को आगे बढ़ाने पर केंद्रित होगा।

एक्सिस मैक्स लाइफ ने स्मार्ट इनोवेशन फंड किया लॉन्च

कोलकाता। जीवन बीमा क्षेत्र की निजी कंपनी एक्सिस मैक्स लाइफ इंश्योरेंस लिमिटेड ने अपने नए स्मार्ट इनोवेशन फंड की शुरुआत की है। कंपनी ने गुरुवार को बयान जारी कर बताया कि यह फंड जीवन बीमा उद्योग में एक नवाचार-थीम आधारित निवेश विकल्प के रूप में पेश किया गया है। यह बड़ी, मध्यम और छोटी-कैप कंपनियों के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करेगा, जो तकनीकी और क्षेत्रीय परिवर्तन की दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। स्मार्ट इनोवेशन फंड का मुख्य उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्य सेवा, जैव प्रौद्योगिकी, वित्तीय क्षेत्र, ऊर्जा, उपभोक्ता बाजार और अन्य उभरते उद्योगों में निवेश कर दीर्घकालिक पूंजी वृद्धि को बढ़ावा देना है। एक्सिस मैक्स लाइफ इंश्योरेंस के ईवीपी और चीफ इनवेस्टमेंट ऑफिसर सचिन बजाज ने कहा, नवाचार आर्थिक विकास की रीढ़ है और निवेशक ऐसे क्षेत्रों में अवसरों की तलाश में हैं जो भविष्य को आकार देंगे। यह फंड विभिन्न उद्योगों की उन कंपनियों को पहचानने और उनमें निवेश करने के लिए तैयार किया गया है, जो नवाचार-आधारित रणनीतियों से लाभान्वित हो सकती हैं। हमारे सक्रिय निवेश दृष्टिकोण के माध्यम से हम निवेशकों के बदलते रुझानों के अनुरूप टिकाऊ और दीर्घकालिक विकास प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं।

एमएसएमई के लिए नया क्रेडिट मूल्यांकन मॉडल आरंभ

एजेंसी

विशाखापत्तनम। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री निर्मला सीतारामण और वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने गुरूवार को यहां बजट बाद परिचर्चा में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम-एमएसएमई के लिए ऑनलाइन डेटाबेस आधारित नया क्रेडिट मूल्यांकन मॉडल आरंभ किया। केंद्रीय बजट 2024-25 में इसकी घोषणा की गई थी।

इसमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बाह्य मूल्यांकन पर निर्भरता की बजाय एमएसएमई क्षेत्र को ऋण देने में अपनी आंतरिक क्षमता विकसित करेंगे। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अर्थव्यवस्था में एमएसएमई के ऑनलाइन डेटाबेस स्कोरिंग के आधार पर नया ऋण मूल ?यांकन ढांचा विकसित करेंगे। ऋण मूल्यांकन ढांचा पारिस्थितिकी तंत्र में डिजिटल और सत्यापन योग्य उपलब्ध डेटा का इस्तेमाल करेगा और सभी ऋण आवेदनों के लिए निष्पक्ष निर्णय तथा बैंक के मौजूदा और नए एमएसएमई ऋणप्राप्तकर्ताओं के लिए ढांचा-आधारित सीमा मूल्यांकन के उपयोग से स्वतः ऋण मूल्यांकन करेगा।

इस ढांचे में ऑनलाइन डेटाबेस में इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रतिभूतियों को रखने और स्थानांतरित करने के सुरक्षित और प्रभावी उपाय - नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड के उपयोग से नाम और पैन प्रमाणीकरण, ओटीपी द्वारा मोबाइल और ईमेल सत्यापन, सेवा प्रदाताओं द्वारा जीएसटी डेटा एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस, खाता एग्रीगेटर द्वारा बैंक स्टेटमेंट विश्लेषण, इनकम टैक्स रिटर्न अपलोड और सत्यापन, एपीआई सक्षम वाणिज्यिक और उपभोक्ता जानकारी तथा क्रेडिट सूचना कम्पनियों द्वारा धोखाधड़ी जांच, एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस द्वारा घाटे कम करने और खराब ऋण नियंत्रित करने की हंटर जांच आदि शामिल होंगे।

2025 में औसत वेतन में 8.8 प्रतिशत बढ़ोतरी होगी: रिपोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय कंपनियां वर्ष 2025 में औसत वेतन वृद्धि को 8.8 प्रतिशत तक सीमित रख सकती हैं तथा वर्ष 2024 में इसके 9.0 प्रतिशत रहने की उम्मीद है।

डेलॉइट इंडिया के शुक्रवार को जारी टैलेंट आउटलुक 2025 सर्वेक्षण के अनुसार, कंपनियां वेतन वृद्धि लागत बजट को संतुलित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। सर्वेक्षण में यह भी सामने आया है कि 75 प्रतिशत कंपनियां वेतन वृद्धि को या तो घटाएंगी या पिछले साल के समान स्तर पर बनाए रखेंगी। इसके अलावा उपभोक्ता उत्पाद क्षेत्र में वेतन वृद्धि बजट में उल्लेखनीय कमी की संभावना है। संगठनों के भीतर प्रमुख प्रतिभाओं को बनाए रखने की रणनीति के तहत, शीर्ष प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को औसत प्रदर्शन करने वालों की तुलना में 1.7 गुना अधिक वेतन वृद्धि मिल सकती है, जो पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा कम है। वहीं, कनिष्ठ प्रबंधन और व्यक्तिगत योगदानकर्ता स्तर के कर्मचारियों को शीर्ष प्रबंधन की तुलना में 1.3 गुना अधिक वेतन वृद्धि मिलने की संभावना है। हालांकि, पदोन्नति पाने वाले कर्मचारियों का कुल प्रतिशत लगभग 12 प्रतिशत पर स्थिर रहने का अनुमान है और एक तिहाई कंपनियों को पिछले साल की तुलना में कम पदोन्नति देने की उम्मीद है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि 2024 में कर्मचारियों की संख्या में कमी 17.4 प्रतिशत रही, इसके बावजूद 80 प्रतिशत कंपनियां आगामी वित्तीय वर्ष में अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने की योजना बना रही हैं। डेलॉइट इंडिया के साझेदार प्रखर त्रिपाठी ने कहा कि राजस्व वृद्धि में गिरावट के चलते कंपनियों पर मुआवजा बजट का दबाव बढ़ रहा है। हालांकि, नियंत्रित एट्रिशन और मध्यम मुद्रास्फीति कंपनियों को वेतन वृद्धि को अनुकूलित करने में मदद कर रही है। तकनीकी विकास और अपस्किलिंग पर जोर देते हुए, कई संगठन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) संचालित अपस्किलिंग, कौशल-अंतराल विश्लेषण और डेटा-संचालित शिक्षण मॉडल अपनाने पर ध्यान दे रहे हैं। हालांकि, हर दो में से एक संगठन यह स्वीकार करता है कि उनके पास एक संरचित योग्यता ढांचा नहीं है।

मलेशियाई पाम ऑयल को बढ़ावा देने के लिए एमपीओसी और ओटीएआई में करार

मुंबई। भारत और मलेशिया के बीच व्यापारिक सहयोग को मजबूत करने के उद्देश्य से मलेशियाई पाम ऑयल काउंसिल (एमपीओसी) और ऑयल टेक्नोलॉजिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ओटीएआई) ने एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। एमपीओसी और ओटीएआई ने शुक्रवार को संयुक्त बयान जारी कर कहा कि इस सहयोग के तहत भारतीय बाजार में मलेशियाई पाम ऑयल के पोषण संबंधी लाभों और स्वास्थ्य विशेषताओं को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। भारत को मलेशियाई पाम ऑयल का अहम बाजार मानते हुए, इस साझेदारी का उद्देश्य पाम ऑयल से जुड़ी गलतफहमियों को दूर करना और इसके स्वास्थ्य एवं औद्योगिक उपयोगों को उजागर करना है। यह पहल उपभोक्ता जागरूकता, उद्योग संवाद और वैज्ञानिक अनुसंधान को प्राथमिकता देगी। एमपीओसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) बेलविंदर स्रॉन ने इस सहयोग की सराहना करते हुए कहा, भारत मलेशियाई पाम ऑयल के लिए एक प्रमुख बाजार बना हुआ है।

अमेरिका बना रहा है बिटकॉइन का क्रिप्टो भंडार

एजेंसी

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बिटकॉइन का एक आभासी मुद्रा (क्रिप्टो) भंडार बनाने की घोषणा की है। श्री ट्रंप ने इससे जुड़े आधिकारिक आदेश पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। व्हाइट हाउस ने शुक्रवार को कहा कि राष्ट्रपति के साथ ही क्रिप्टो भंडार बनाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उल्लेखनीय है कि भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश बिटकॉइन को आधिकारिक मान्यता नहीं दे रहे हैं लेकिन श्री ट्रंप द्वारा क्रिप्टो भंडार बनाने की पहल से इस आभासी मुद्रा को वैश्विक स्तर पर मान्यता पाने में मदद मिलेगी।

व्हाइट हाउस ने कहा, कुछ ही मिनट पहले, राष्ट्रपति ट्रम्प ने रणनीतिक बिटकॉइन रिजर्व स्थापित करने के लिए एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए। रिजर्व को संघीय सरकार के स्वामित्व वाले बिटकॉइन से पूंजीकृत किया जाएगा, जिसे आपराधिक या नागरिक संपत्ति जब्ती कार्यवाही के हिस्से के रूप में जब्त किया गया था। इसका मतलब है कि इससे करदाताओं को एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। इसमें कहा गया है कि अमेरिकी सरकार के पास लगभग दो लाख बिटकॉइन हैं; हालाँकि, कभी भी पूर्ण ऑडिट नहीं हुआ है। राष्ट्रपति का कार्यकारी आदेश संघीय सरकार की डिजिटल संपत्ति होल्डिंग्स का पूरा लेखा-जोखा रखने का निर्देश देता है। अमेरिका अपने रिजर्व में जमा किए गए किसी भी बिटकॉइन को नहीं बेचेगा। इसे मूल्य के भंडार के रूप में रखा जाएगा। रिजर्व क्रिप्टोकरेंसी के लिए एक डिजिटल फोर्ट नॉक्स की तरह है जिसे अक्सर 'डिजिटल गोल्ड' कहा जाता है। इसमें कहा गया है कि बिटकॉइन की समय से पहले बिक्री से अमेरिकी करदाताओं को पहले ही 17 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान हो चुका है। अब संघीय सरकार के पास अपनी होल्डिंग्स के मूल्य को अधिकतम करने की रणनीति होगी। ट्रेजरी और वाणिज्य सचिवों को अतिरिक्त बिटकॉइन प्राप्त करने के लिए बजट-तटस्थ रणनीति विकसित करने के वास्ते अधिकृत किया गया है, बशर्ते कि उन रणनीतियों से अमेरिकी करदाताओं पर कोई अतिरिक्त लागत न आए। इसके अलावा, कार्यकारी आदेश एक अमेरिकी डिजिटल एसेट स्टॉकपाइल की स्थापना करता है, जिसमें आपराधिक या सिविल कार्यवाही में जब्त किए गए बिटकॉइन के अलावा अन्य डिजिटल संपत्तियां शामिल हैं। सरकार स्टॉकपाइल के लिए जब्ती कार्यवाही के माध्यम से प्राप्त की गई संपत्तियों से परे अतिरिक्त संपत्तियां नहीं खरीदेगी। स्टॉकपाइल का उद्देश्य ट्रेजरी विभाग के तहत सरकार की डिजिटल संपत्तियों का जिम्मेदाराना प्रबंधन करना है। इसमें किए गए वादे, निभाए गए वादे का उल्लेख करते हुए कहा गया है ।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय :- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

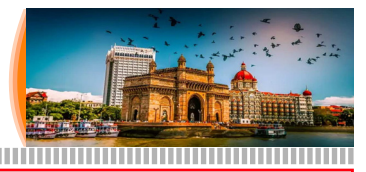

प्रधानमंत्री कार्टून विवादः मद्रास उच्च न्यायालय ने केंद्र को तमिल पत्रिका की वेबसाइट को बहाल करने का दिया निर्देश

एजेंसी

चेन्नई। मद्रास उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को लोकप्रिय तमिल पत्रिका 'आनंद विकटन' की वेबसाइट बहाल करने का निर्देश दिया है, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हाल में हुई अमेरिका यात्रा के दौरान एक विवादास्पद कार्टून प्रकाशित करने के बाद ब्लॉक कर दिया गया था।

न्यायालय ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय को ब्लॉक की गई वेबसाइट को बहाल करने का निर्देश देते हुए आदेश दिया कि पत्रिका को अस्थायी रूप से वह कार्टून हटा देना चाहिए, जिस पर भाजपा ने श्री मोदी को अपमानजनक तरीके से चित्रित करने और उनका अपमान करने के लिए कड़ी आपत्ति व्यक्त की है। शुक्रवार को प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार, अदालत के आदेश के बाद पत्रिका की वेबसाइट बहाल कर दी गई है और विवादास्पद कार्टून हटा दिया गया है। पत्रिका, जो एक सदी से भी अधिक समय से प्रकाशित हो रही है, ने एक व्यंग्यात्मक कार्टून प्रकाशित किया था, जिसमें श्री मोदी को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ उनकी हालिया अमेरिका यात्रा के दौरान जंजीरों में जकड़ा हुआ दिखाया गया था। आनंद विकटन प्रकाशन समूह द्वारा दायर याचिका पर अंतरिम आदेश पारित करते हुए, जिसमें वेबसाइट को ब्लॉक करने के केंद्र के 25 फरवरी के आदेश को चुनौती दी गई थी और वेबसाइट तक सार्वजनिक पहुंच बहाल करने के लिए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को निर्देश देने की मांग की गई थी, न्यायमूर्ति डी भरत चक्रवर्ती ने सरकार को पत्रिका पोर्टल www.vikatan.com पर प्रतिबंध हटाने का निर्देश दिया और वेबसाइट से कार्टून वाले कवर पेज को अस्थायी रूप से हटाने को कहा।

न्यायाधीश ने सरकार को पत्रिका पोर्टल www.vikatan.com पर प्रतिबंध हटाने का निर्देश दिया, तथा वेबसाइट से कार्टून वाले कवर पेज को अस्थायी रूप से हटाने को कहा। न्यायाधीश ने कहा कि जब तक अदालत यह निर्णय नहीं ले लेती कि कार्टून का प्रकाशन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दायरे में आता है या इससे विदेशी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध प्रभावित होते हैं, तब तक पूरी वेबसाइट तक सार्वजनिक पहुंच को अवरुद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि मंत्रालय को अदालती आदेश का इंतजार किए बिना, पत्रिका द्वारा विवादास्पद कार्टून हटा दिए जाने के बाद वेबसाइट को बहाल कर देना चाहिए।

ईडी ने एसडीपीआई कार्यालय में छापा मारा

एजेंसी

मलप्पुरम। केरल के मलप्पुरम में स्थित सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) जिला कार्यालय में चेन्नई और कोच्चि से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीमों ने गुरुवार को छापा मारा। यह छापेमारी देशभर में एसडीपीआई के 11 अन्य कार्यालयों पर राष्ट्रव्यापी तलाशी अभियान के तहत की गई। छापेमारी सुबह करीब 11 बजे शुरू हुई और दोपहर करीब 2.15 बजे समाप्त हुई। यह छापेमारी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की सुरक्षा में की गई। तलाशी के विवरण के बारे में राज्य पुलिस को जानकारी नहीं दी गई। ईडी अधिकारियों द्वारा सुबह चेन्नई से पलायम स्थित एसडीपीआई के राज्य समिति कार्यालय में भी इसी तरह की तलाशी की गई। रिपोर्ट के अनुसार ईडी ने तलाशी अभियान में कई रजिस्टर, बैंक विवरण और पुस्तिकाएं जब्त की हैं। इस बीच एसडीपीआई कार्यकर्ताओं ने मलप्पुरम शहर में विरोध प्रदर्शन किया और ईडी के खिलाफ नारेबाजी की। बाद में एसडीपीआई कार्यकर्ताओं ने जिला कार्यालय से कुन्नुमल जंक्शन तक विरोध मार्च निकाला। एसडीपीआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष एम के फैजी को ईडी अधिकारियों ने तीन मार्च को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में नई दिल्ली हवाई अड्डे से गिरफ्तार किया था। ईडी को संदेह है कि एसडीपीआई ने अवैध हवाला चैनलों के माध्यम से पीएफआई से करोड़ों रुपये प्राप्त किए और आरोप लगाया कि इस धन का उपयोग एसडीपीआई द्वारा अपनी इकाइयों में राजनीतिक कार्यों के लिए किया जा रहा था। केंद्र सरकार ने पहले ही राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में पीएफआई पर प्रतिबंध लगा दिया है और 2022 में इसके शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार किया है।

संक्षिप्त सामाचार

दुष्कर्म के दोषी को सुनायी 20 साल की सजा

अगरतला। त्रिपुरा में धलाई जिला एवं सत्र न्यायालय ने शुक्रवार को एक अधेड़ व्यक्ति को ढाई साल पहले एक नाबालिग लड़की से दुष्कर्म के मामले में दोषी करार देते हुए 20 साल कैद की सजा सुनाई और 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया। मामले के अतिरिक्त लोक अभियोजक इंदु भूषण देब ने कहा कि कमलपुर पुलिस थाने के अंतर्गत चोटो सुरमा इलाके का दोषी चंदन माली सितंबर 2022 की सुबह पास के एक घर में घुस गया, जहां नाबालिग लड़की घर पर अकेली थी। उसने उसके साथ दुष्कर्म किया और उसे घायल अवस्था में छोड़ कर फरार हो गयो। नाबालिग की मां, जो पड़ोसी के घर में थी, अपनी बेटी की चीख सुनकर वापस लौटी और देखा कि चंदन माली घटनास्थल से भाग रहा था। परिजनों ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया और पुलिस ने उसके खिलाफ यौन अपराध से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की धारा 6 और भारतीय दंड संहित की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया। दो साल की सुनवाई के बाद अदालत ने चंदन माली को दोषी करार देते हुए 20 साल की सजा सुनाई। अदालत ने सुनवाई के दौरान 24 गवाहों के बयान दर्ज किए।

श्रीलंकाई नौसेना ने 14 भारतीय मछुआरों को हिरासत में लिया

कोलंबो। श्रीलंकाई नौसेना ने गुरुवार रात श्रीलंकाई जलक्षेत्र में अवैध शिकार करने के आरोप में 14 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया और एक मछली पकड़ने वाली नाव जब्त की। यह जानकारी श्रीलंकाई नौसेना ने शुक्रवार को एक बयान में दी। बयान में कहा गया कि ये गिरफ्तारियां देश के उत्तरी प्रांत मन्नार के तटवर्ती जलक्षेत्र में हुईं। नौसेना ने कहा कि जब्त नाव और मछुआरों को मन्नार लाया गया तथा आगे की कानूनी कार्यवाही के लिए मन्नार के मत्स्य निरीक्षक को सौंप दिया गया। इन नवीनतम गिरफ्तारियों के साथ, श्रीलंकाई नौसेना ने 2025 में अपने जलक्षेत्र में अवैध शिकार करने के लिए कुल 19 भारतीय मछली पकड़ने वाली नौकाओं को जब्त किया है और 145 भारतीय मछुआरों को हिरासत में लिया है। श्रीलंकाई नौसेना ने दोहराया कि वह विदेशी जहाजों द्वारा अवैध रूप से मछली पकड़ने को रोकने के लिए अपने जलक्षेत्र में नियमित गश्त और अभियान चला रही है।

अब सुधा हुआ ग्लोबल, नीतीश ने निर्यात कंसाइनमेंट को दिखाई हरी झंडी

पटना। बिहार के दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड (कॉम्फेड) का प्रतिष्ठित ब्रांड सुधा अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता के चलते देशभर में लोकप्रिय होने के बाद अब वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना रहा है और इस कड़ी में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज निर्यात कंसाइनमेंट को हरी झंडी दिखाकर इसके 'लोकल से ग्लोबल' होने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। श्री कुमार ने शुक्रवार को यहां एक, अणे मार्ग से पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के तहत सुधा के पहले निर्यात कंसाइनमेंट का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने दो वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने निर्यात के लिए भेजे जानेवाले सामान घी, मखाना एवं गुलाब जामुन का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री को इस दौरान पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. एन. विजयालक्ष्मी ने विस्तृत जानकारी देते हुये बताया कि एक वाहन में मखाना और घी को अमेरिका के लिये तथा दूसरे वाहन में गुलाब जामुन को कनाडा के लिये भेजा जा रहा है।

मैक्रों ने यूक्रेन में संघर्ष विराम पर जोर दिया रूस ने नाटो के शामिल होने की चेतावनी दी

एजेंसी

मॉस्को। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि रूस यूरोपीय सैनिकों की यूक्रेन में संभावित तैनाती को संघर्ष में सीधे नाटो की भागीदारी के रूप में देखेगा। श्री लावरोव ने इस कदम को रूसी संघ के खिलाफ युद्ध में नाटो देशों की प्रत्यक्ष, आधिकारिक और स्पष्ट भागीदारी कहा और चेतावनी दी कि यूक्रेन में ऐसी ताकतों की उपस्थिति मॉस्को को अस्वीकार्य है। रूसी विदेश मंत्री की यह टिप्पणी फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की ओर से बुधवार को की गई घोषणा के बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि वह शांति समझौते को लागू करने के लिए यूक्रेन में यूरोपीय सैनिकों को भेजने पर विचार करेंगे, हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि सैनिक अग्रिम मोर्चे पर लड़ाई में शामिल नहीं होंगे। श्री लावरोव ने कहा कि यह रूस के लिए एक खतरा है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन में यूरोपीय सेना की तैनाती के मुद्दे पर मॉस्को को समझौते की कोई गुंजाइश नहीं दिखती। उन्होंने कहा कि यह चर्चा निश्चित रूप से शत्रुतापूर्ण उद्देश्य से की जा रही है।

अनुश्री फाउंडेशन द्वारा संजय गांधी निराधार योजना लेकर जिलाधिकारी को दिया ज्ञापन

शकुन टाइम्स संवाददाता

पालघर। जिले के बोईसर में एक सुप्रसिद्ध संगठन अनुश्री फाउंडेशन की ओर से संजय गांधी निराधार योजना से वंचित विधवा महिलाओं को पेंशन देने की मांग को लेकर पालघर जिलाधिकारी गोविंद बोडके को ज्ञापन पत्र सौंपा गया।

बोईसर में सुप्रसिद्ध संगठन अनुश्री फाउंडेशन की समाजसेविका व सचिव पुष्पा तिवारी द्वारा जिलाधिकारी गोविंद बोडके को सौंपे गए ज्ञापन पत्र में बताया गया है कि जिले की कई विधवा महिलाओं को संजय गांधी निराधार योजना का लाभ अब तक नहीं मिल पाया है। जब कि ये विधवा महिलाएं कई बार जनता दरबार के चक्कर काट चुकी हैं। बोईसर में सुप्रसिद्ध समाजसेवी संगठन अनुश्री फाउंडेशन द्वारा जिलाधिकारी गोविंद बोडके को दी गई विधवा महिलाओं सूची के माध्यम से बताया गया है लेकिन संबंधित विभाग द्वारा पहले तो टाल मटोल किया गया। संजय गांधी निराधार योजना से फिर भी अभी तक लाभ से वंचित हैं। इस वक्त अपनी जिविका निर्वाह करने हेतु बेसहारा लाचार महिलाओं के समक्ष बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। सुप्रसिद्ध समाजसेवी संगठन अनुश्री फाउंडेशन के माध्यम से विधवा महिलाओं ने जिलाधिकारी गोविंद बोडके से मुलाकात कर संजय गांधी निराधार योजना के तहत पेंशन लागू कराने की अपील की।

इस दौरान जिलाधिकारी गोविंद बोडके ने अपनी जिम्मेदारी लेते हुए उक्त योजना में शामिल सभी महिलाएं को पेंशन लागू कराने का भरोसा दिया।

पालघर जिलाधिकारी को ज्ञापन पत्र सौंपते समय बोईसर में सुप्रसिद्ध संगठन समाजसेविका व सचिव पुष्पा तिवारी के साथ बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

भारी मात्रा में विदेशी शराब के साथ कारोबारी गिरफ्तार

छपरा। बिहार में सारण जिले की उत्पाद विभाग की टीम ने भेल्दी थाना क्षेत्र से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद करने के साथ ही शराब कारोबारी को गिरफ्तार किया है। उत्पाद विभाग सूत्रों ने शुक्रवार को यहां बताया कि सूचना के आधार पर टीम ने पचलख गांव स्थित सीमेंट ईंट्ट फैक्ट्री में छापामारी कर 385 लीटर विदेशी शराब बरामद की।

इसके साथ ही टीम ने एक कार और एक मोटरसाइकिल को जब्त करने के साथ ही परसा थाना क्षेत्र के बनौता मुकुंद गांव निवासी शराब कारोबारी रितेश कुमार को गिरफ्तार कर लिया। सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार शराब कारोबारियों के विरूद्ध मधनिषेद एवं उत्पाद अधिनियम की धारा 30 (ए) के तहत प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

शाह सीआईएसएफ स्थापना दिवस समारोह में हुए शामिल

एजेंसी

चेन्नई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को तमिलनाडु के रानीपेट जिले के थक्कोलम में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के 56वें स्थापना दिवस समारोह में शामिल हुए।

सीआईएसएफ क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र (आरटीसी) में गार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त करने और रस्मी परेड देखने के बाद श्री शाह ने सीआईएसएफ कर्मियों का साहसिक अभ्यास देखा। इस अभ्यास में आतंकवादी ताकतों को बेअसर करना, आतंकवादी हमलों के प्रयासों को विफल करना, आतंकवादियों से %बंधकों% को छुड़ाना, खोजी कुत्तों और अन्य मॉक ड्रिल का उपयोग करके बमों का पता लगाना तथा उनका निपटान करना शामिल था। इससे पहले, श्री शाह ने आरटीसी पहुंचने के साथ ही इसका नाम बदलकर सदियों पहले युद्ध में शहीद हुए चोल राजकुमार की याद में राजादित्य चोलन क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र (आरटीसी) कर दिया। आरटीसी का नाम बदलकर राजदित्य चोलन के नाम पर रखने का आदेश सीआईएसएफ के महानिदेशक राजविंदर सिंह भट्टी ने जारी किया। श्री शाह गुरुवार रात नयी दिल्ली से विशेष विमान से अरक्कोणम स्थित आईएनएस राजाली एयर बेस पहुंचे। आईएनएस राजाली से वह रात्रि विश्राम के लिए थक्कोलम स्थित आरटीसी पहुंचे, जहां उन्होंने आरटीसी के नाम बदलने के समारोह और सीआईएसएफ के 56वें स्थापना दिवस समारोह में हिस्सा लिया। गुजरात और पश्चिम बंगाल से शुरू होने वाले सीआईएसएफ तटीय साइक्लोथॉन 'सुरक्षित तट, समृद्ध भारत' को थक्कोलम से वर्चुअली हरी झंडी दिखाने के बाद वह आईएनएस राजाली के लिए रवाना हुए, जहां से उन्होंने बेंगलुरु के लिए प्रस्थान किया। श्री शाह के दौरे के मद्देनजर पुलिस ने रानीपेट, वेल्लोर और तिरुप्पत्तूर जैसे पड़ोसी जिलों तथा अरक्कोणम में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए हैं। श्री शाह के दौरे के मद्देनजर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के तहत जिला प्रशासन ने दो दिनों के लिए ड्रोन और किसी भी अन्य मानव रहित हवाई वाहन की उड़ान पर प्रतिबंध लगा दिया है। गौरतलब है कि सीआईएसएफ भारत के सुरक्षा तंत्र में एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में कार्य करता है। वर्तमान में, लगभग दो लाख कर्मियों के साथ, सीआईएसएफ कर्मी भारत भर में 359 प्रमुख प्रतिष्ठानों को सुरक्षा प्रदान करते हैं, जिनमें 25 राज्य, पाँच केंद्र शासित प्रदेश, 68 हवाई अड्डे, दिल्ली मेट्रो रेल, 103 बिजली संयंत्र, 18 परमाणु सुविधाएँ, 17 अंतरिक्ष-संबंधी प्रतिष्ठान, 47 केंद्रीय सरकारी भवन, 14 बंदरगाह, छह रक्षा प्रतिष्ठान, 37 तेल और प्राकृतिक गैस इकाइयाँ, 19 इस्पात संयंत्र और 10 कोयला खदानें शामिल हैं।

आतिशी ने महिलाओं को 2500 रुपये देने को लेकर रेखा गुप्ता को लिखा पत्र

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में विपक्ष की नेता आतिशी ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को शुक्रवार को एक पत्र लिखकर महिलाओं को 2500 रुपये देने का वादा पूरा करने की माँग की।

सुश्री आतिशी ने सुश्री गुप्ता को एक पत्र लिखकर कहा कि दिल्ली की लाखों माताओं-बहनों की ओर से आपको यह पत्र लिख रही हूं और आपको याद दिलाना चाहती हूं कि 31 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने द्वारका में आयोजित रैली में दिल्ली की माताओं-बहनों से वादा किया था कि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बनते ही पहली कैबिनेट बैठक में 2500 रुपए प्रतिमाह देने की योजना पारित होगी और महिला दिवस पर महिलाओं के खातों में पैसे आने शुरू हो जाएंगे। उन्होंने सभी महिलाओं को सलाह दी थी कि वे अपने बैंक खाते से अपने मोबाइल नम्बर को जोड़ लें, ताकि जब उनके अकाउंट में पैसे आएंगे तो उनके फोन पर इसकी जानकारी मिल सके। सुश्री आतिशी ने कहा है कि अब महिला दिवस में सिर्फ एक दिन बचा है। पूरी दिल्ली की महिलाएं इस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हैं। वे उम्मीद लगाए बैठी हैं कि आठ मार्च से उनके अकाउंट में पहली किस्त आनी शुरू हो जाएगी, जैसा कि भाजपा ने वादा किया था। उन्होंने कहा है कि मुख्यमंत्री जी, दिल्ली की महिलाओं को उनका हक दिलाने के लिए तुरंत उनके खातों में पैसे ट्रांसफर किए जाएं। दिल्ली की हर महिला आपकी ओर देख रही है, उनकी उम्मीदें टूटनी नहीं चाहिए। मुझे पूरी उम्मीद है कि कल दिल्ली की हमारी माताओं-बहनों को उनके खातों में 2500 रुपए मिलने का मैसेज उनके मोबाइल पर ज़रूर आएगा।

पूरी दिल्ली में खुलेंगे जन औषधि केंद्र : रेखा गुप्ता

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आज जन औषधि दिवस के अवसर पर अशोक विहार स्थित जन औषधि केंद्र का दौरा कर कहा कि पूरी दिल्ली में जन औषधि केंद्र खोले जाएंगे।

श्रीमती रेखा गुप्ता ने बताया कि आज जन औषधि दिवस के अवसर पर हमने दिल्ली में अशोक विहार में स्थित प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र का दौरा कर व्यवस्था का जायज़ा लिया। उन्होंने बताया कि पिछली सरकार के कारण दिल्ली में हम प्रधानमंत्री जन औषधि योजना को लागू नहीं कर पाए लेकिन हमारी सरकार इस लाभकारी योजना को दिल्ली में लागू करेगी ताकि दिल्ली के लोगो को उच्च गुणवत्ता वाली दवाएँ और चिकित्सा सम्बन्धी वस्तुएँ कम कीमतों पर उपलब्ध कराई जा सके। इस योजना से गरीब लोगों को लाभ मिलता है। उन्होंने बताया कि हमारी सरकार दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेशानुसार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सभी सरकारी अस्पताल के 500 मीटर के दायरे में कम से कम एक जन औषधि केंद्र स्थापित करेगी ताकि मरीजों को अच्छी और सस्ती दवाइयाँ उपलब्ध की जा सके। जनऔषधि केंद्र ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 50-70प्रतिशत कम कीमत पर जनता को उपलब्ध कराती है। बहुत सारी दवाइयाँ 90 प्रतिशत तक कम कीमत पर उपलब्ध है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद करते हुए बताया कि दिल्ली सरकार के अस्पतालों में प्रधानमंत्री भारतीयजन औषधि परियोजना (पीएमबीजेपी) का कार्यान्वयन सभी नागरिकों के लिए सस्ती स्वास्थ्य सेवा सुलभ बनाने और रोगियों पर वित्तीय बोझ को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दुष्कर्मियों का आर्थिक बहिष्कार किया जाये: भड़ाना

भीलवाड़ा। राजस्थान में भीलवाड़ा में कैफे कांड के साथ ही बिजयनगर दुष्कर्म और ब्लैकमेल कांड पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मांडल के विधायक उदयलाल भड़ाना ने कहा है कि दुष्कर्मियों का 'आर्थिक बहिष्कार' करने की मांग की। श्री भड़ाना ने गुरुवार को यहां ग्रामीण हाट बाजार में राजीविका की ओर से लगाए गये सखी मेले में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि लोग संगठित होकर ताकत के साथ रहें तो उनकी तरफ कोई आंख उठाकर नहीं देख सकेगा। उन्होंने कहा कि हमारे देश, गांव, घर-परिवार की माताएं-बहनें सुरक्षित रहें, ये हमारी आन-बान और शान हैं। अगर इन पर आंच आती है तो सभी राजनीतिक दलों को अपने मतभेद भुलाकर एक साथ एक मंच पर खड़ा रहना चाहिए। श्री भड़ाना ने कहा कि भीलवाड़ा और बिजयनगर की घटनाओं को लेकर संत समाज 10 मार्च को आंदोलन करेगा। हमें संतों के साथ आंदोलन करना चाहिए। जब संत हमारे साथ खड़े हों तो चिंता की कोई बात नहीं करनी चाहिए।

केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री एवं महराजगंज सासद पंकज चौधरी और पनियरा विधायक ज्ञानेन्द्र सिंह शकुन टाइम्स अखबार को प्रमुखता से पढ़ते हुए

RNI : UPHIN/2012/45286
शकुन टाइम्स
(राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत
YouTube shakuntimes
आवश्यकता है
भारत के समस्त राज्यों व जिलों में अनुभवी
और तेज तर्रार प्रेस रिपोर्टरों की
यदि आप में है गलत को गलत कहने की हिम्मत
तो शकुन टाइम्स में आपका स्वागत है
नोट : प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया में एक साथ कार्य करने का सुनहरा अवसर
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- 9415052283, 9506320127
संपर्क कार्यालय : शक्तिपीठ,सारनाथ,वाराणसी (उ.प्र.) 221007